श्रीतारानित्यार्चन

श्रीतारा-नित्यार्चन

लेखक
'कुल-भूषण' पण्डित रमादत्त शुक्ल, एम० ए०

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपीबाग मार्ग, प्रयाग—६

तृतीय संस्करण] [चैत्र २०४४

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन,
चण्डी कार्यालय, अलोपीबाग मार्ग,
इलाहाबाद—२११००६

ततीय संस्करण : चैत्र पूर्णिमा, २०४४ वि०

मुद्रक
श्री ऋतशील शर्मा,
परा वाणी प्रेस,
अलोपीबाग मार्ग, इलाहाबाद—२११००६

अ - नु - क्र - म

निशार्चन

विषय-प्रवेश

महिमा-मयी भगवती तारा की यह पूजा-पद्धति ३५ वर्ष पूर्व ज्येष्ठ पूर्णिमा सम्वत् २००६ को प्रकाशित हुई थी। द्वितीया महाविद्या की ऐसी कोई उपयोगी पद्धति उस समय सुलभ नहीं थी, जिससे साधक अपना अर्चन कर सकते। हमें इस बात का सन्तोष है कि इस पद्धति के द्वारा उक्त अभाव की पूर्ति ही नहीं हुई, किन्तु साधकों ने इसका हृदय से स्वागत भी किया। इसका दूसरा संस्करण सं० २०३३ की ज्येष्ठ पूर्णिमा को प्रकाशित हुआ था।

भगवती तारा की इस एक-मात्र पूजा-पद्धति का प्रकाशन करने में हमें भैरव-कुण्ड (विन्ध्याचल-उ० प्र०) के ब्रह्मीभूत स्वामी अक्षोभ्यानन्द सरस्वती जी महाराज का आशीर्वाद ही पूर्णतया सहायक हुआ। उन्हीं ने अपने पास से श्री तारा जी की एक प्राचीन पद्धति देकर इस महत्-कार्य को पूर्ण करने के लिए मुझे उत्साहित किया था। यही नहीं, कृपापूर्वक उन्होंने इसका अन्तिम प्रूफ पढ़ने का भी कष्ट उठाया था। यदि यह सब न होता, तो हम श्री तारा जी की यह पूजा-पद्धति पाठकों को भेंट करने में समर्थ न होते। आज इस पद्धति का तृतीय संस्करण प्रकाशित करते समय हमें निरन्तर उन उदार-मना स्वामी जी का स्मरण आ रहा है। उन्हीं की पुण्य स्मृति में हम इस संस्करण को समर्पित कर रहे हैं।

श्री तारा जी के दिव्य स्वरूप के अनेक भव्य रूप तन्त्रों में वर्णित हैं। उन सबके भिन्न-भिन्न मन्त्रों और ध्यान का भी उनमें उल्लेख है, परन्तु अपने देश में विशेष रूप से उनके तीन

ही दिव्य स्वरूपों के उपासक पाये जाते हैं। एक स्वरूप का नाम श्रीउग्र-तारा, दूसरे का श्रीएक - जटा और तीसरे का श्रीनील-सरस्वती है। इन तीनों स्वरूपों के अपने अलग-अलग मन्त्र, ध्यान आदि हैं। न्यासों में भी कहीं-कहीं कुछ अन्तर है। शेष पूजा सर्वत्र समान है।

इस पुस्तक में श्रीउग्र-तारा जी की ही पूजा का विधान लिखा गया है। जहाँ-जहाँ श्रीएक-जटा और श्रीनील-सरस्वती के क्रम में अन्तर है, वहाँ - वहाँ पाद - टिप्पणियों में वे अन्तर स्पष्ट कर दिये गये हैं। ऐसा कर देने से इस पुस्तक के क्रम के अनुसार तीनों ही स्वरूपों के उपासक अपनी पूजन-प्रक्रिया भले प्रकार कर सकते हैं।

श्रीउग्र-तारा जी के प्रसिद्ध सार्द्ध पंचाक्षर मन्त्र का उद्धार मत्स्य-सूक्त में इस प्रकार है—

माया-बीजं (ह्रीं) समुद्धृत्य त-वर्ग-प्रथमं तथा।
रति-विन्दु-वह्नि-युतं (त्रीं) द्वितीयं बीजमुत्तमम्॥
कूर्च-बीजं (हूँ) तृतीयं तु फट्-कारस्तदनन्तरम्।
सम्पूर्ण-सिद्ध-मन्त्रस्तु रश्मि-पञ्चक (ॐ)-संयुतः॥

'तारार्णव' में भी लिखा है—

१—ॐ ह्रीं त्रीं हूँ फट्

तारं लज्जां त्रं-कामेशीं हूँ फडित्युग्र - तारिका।

२—ह्रीं त्रीं हूँ फट्

माया त्रीं हूमप्यस्त्रान्तमित्येक - जटामर्चयेत्॥

३—ह्रीं त्रीं हूँ

अस्त्र (फट्)-हीनमिदं नील-सरस्वत्या विनिर्दिशेत्॥

भगवती तारा के विविध मन्त्रों के विभिन्न उद्धारों के विस्तृत विवेचन हेतु देखें 'मन्त्र-कोष', पृष्ठ १२६-४३।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि श्रीउग्र-तारा के महा-मन्त्र के प्रथम वीज के हटाने से श्रीएक-जटा का और प्रथम वीज तथा अन्तिम फट्कार के हटाने से श्रीनील-सरस्वती का मन्त्र निकल आता है। देखें पृष्ठ ६ के क्रमांक १, २, ३ द्वारा निर्दिष्ट तीन मन्त्र। इन मन्त्रों से स्पष्ट है कि श्री तारा के ये तीनों ही भव्य रूप एक ही स्वरूप के विशिष्ट रूप हैं और इन्हीं की आराधना भारतीय साधक श्रद्धा-पूर्वक करते हुए पाये जाते हैं।

इन तीनों स्वरूपों का पूजन एक ही यन्त्र-विग्रह में होता है, परन्तु वे यन्त्र-विग्रह दो प्रकार के हैं। साधक यथा-रुचि उन्हीं दोनों में से किसी एक में माता तारा का पूजन करके अपना अभीष्ट सिद्ध करते हैं।

श्री तारा जी की आराधना का क्रम इस पुस्तक में पूरा-पूरा दिया गया है। इसे सर्वाङ्ग-पूर्ण बनाने के लिए 'तारा-भक्ति-सुधार्णव', 'मन्त्र-महोदधि' आदि से भी सहायता ली गई है। हमें विश्वास है कि इस पुस्तक से तारा जी के भक्तों को अपने इष्ट-देवता के पूजन में पूरी-पूरी सहायता मिली है, तभी यह तीसरा संस्करण प्रकाशित करने का हमें अवसर मिला है।

अन्त में यह उल्लेखनीय है कि इस पद्धति को मणिपुर-वासी 'कौल-कल्पतरु' पं० देवीदत्त शुक्ल के निजी निर्देशन में प्रस्तुत किया गया था। अतः आपकी १६ वीं पुण्य-तिथि (२० मई, १९८७) के अवसर पर इसके तृतीय संस्करण को प्रकाशित करने में हमें विशेष सन्तोष का अनुभव हो रहा है।

प्रयाग, चैत्र पूर्णिमा, २०४४ —रमादत्त शुक्ल

पूजन-यन्त्र
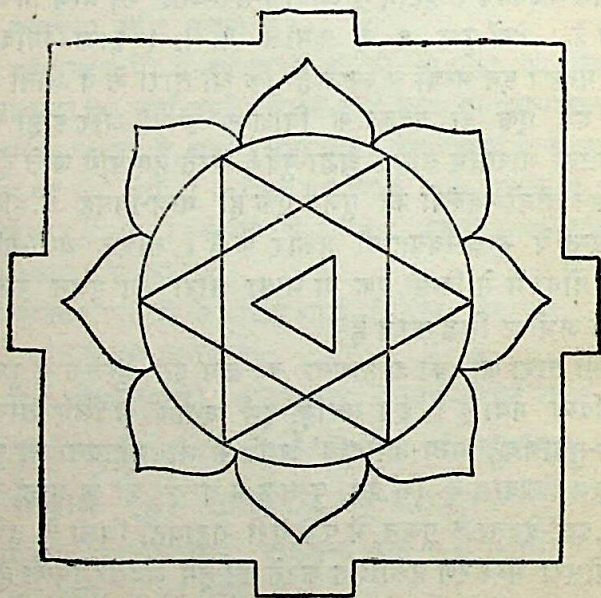
विज्ञप्ति—साधक अपने क्रम के अनुसार इस यन्त्र में यथा-स्थान परिवर्तन कर भगवती तारा तथा उनके आवरण-देवताओं का पूजन करते हैं। मध्यस्थ त्रिकोण के केन्द्र में बिन्दु बना लें।

श्रीतारा-नित्यार्चन

प्रातःकृत्य

१—गुरु-स्मरण

साधक ब्राह्म-मुहूर्त में उठे और आलस्य छोड़कर रात्रि के कपड़े अलग हटाकर शुद्ध होवे। तब स्त्री का दर्शन कर पद्मासन से बैठे। फिर अपनी नाभि के ऊपर दाहना हाथ रखकर उसके ऊपर बाँयाँ हाथ रखे। तदनन्तर शिर में स्थित अधोमुखी शुक्ल-वर्ण के सहस्र-दल कमल का ध्यान करे। उसकी कर्णिका में चन्द्र-मण्डल के अन्तर्गत ऊर्ध्व-मुख शुक्ल-वर्ण के द्वादश-दल कमल का ध्यान करे। इस कमल की कर्णिका के ऊपर अकथादि तीन रेखावाले और ह - ल - क्षादि तीन कोणवाले त्रिकोण से युक्त शक्ति-मण्डल का ध्यान करे। उस मण्डल के अन्दर स्थित हंस-पीठ पर अपने गुरुदेव का ध्यान करे। यथा—

शुद्ध-स्फटिक-सङ्काशं शुद्ध-क्षौम-विराजितं।
गन्धानुलेपनं शान्तं वराभय-कराम्बुजम् ।।
मन्द-स्मितं निज-गुरुं कारुण्येनावलोकितं।
वामोरु-शक्ति-संयुक्तं सर्वाभरण-भूषितम् ।।
स्व-शक्त्या दक्ष-हस्तेन धृत-चारु-कलेवरं।
वामे धृतोत्पलायाश्च सुरक्तायाः सुशोभनम् ।।
परानन्द-परोल्लास-लोचन - द्वय -पङ्कजम्।

इस प्रकार अपने गुरुदेव कर ध्यान कर यह अनुभव करे कि उनके चरण-कमलों से स्रवित अमृत की धारा से मेरा सारा शरीर धुल गया है। तदनन्तर पञ्च मानस उपचारों से गुरुदेव का पूजन करे। यथा—

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं ऐं श्रीं अमुकानन्दनाथ[1] अमुकी देव्यम्बा श्रीपादुकाभ्यां समर्पयामि नमः—कनिष्ठा और अंगुष्ठ की मुद्रा से गन्ध प्रदान करे।

हं आकाशात्मकं पुष्पं ऐं श्रीं अमुका०—तर्जनी-अंगुष्ठ से।
यं वाय्वात्मकं धूपं ऐं श्रीं अमुका०—मध्यमा-अनामा-अंगुष्ठ।
रं तैजसात्मकं दीपं ऐं श्रीं अमुका०—मध्यमा-अंगुष्ठ से।
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं ऐं श्रीं अमुका०—अनामा-अंगुष्ठ से।
सं सर्वात्मकं ताम्बूलं ऐं श्रीं अमुका०—सब अंगुलियों से।

इस प्रकार पूजन कर गुरु-पादुका-मन्त्र का यथा-शक्ति जप करे अथवा 'ऐं' वीज का अष्टोत्तर-शत बार जप करे। तदनन्तर गुरुदेव के दाहने हाथ में जप-फल का समर्पण करे। यथा—

गुह्यातिगुह्य - गोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव ! त्वत्-प्रसादान्महेश्वर ॥

इस प्रकार जप-फल गुरुदेव को समर्पित कर निम्न चार मन्त्रों से उन्हें प्रणाम करे—

ॐ अखण्ड-मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्-पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

---

[1] 'अमुकानन्दनाथ' 'अमुकी-देव्यम्बा' के स्थान पर अपने गुरुदेव एवं गुरु-पत्नी के दीक्षा-नामों का उच्चारण करना चाहिये।

ॐ अज्ञान-तिमिरान्धस्य ज्ञानांजन-शलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।
ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुरेव पर-ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।
ॐ न गुरोरधिकं तत्त्वं न गुरोरधिकं तपः ।
तत्त्व-ज्ञानात् परं नास्ति तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।

इस प्रकार प्रणाम करने के बाद हाथ जोड़कर प्रार्थना करे। यथा—

ॐ विहितं विदधे नाथ ! विधेयं यत् कृपाकर !
अविरुद्धे भवेत् तत्र तत् त्वदीय-प्रसादतः ।।

२—कुण्डलिनी-शक्ति का स्मरण

इस प्रकार गुरु की आज्ञा ग्रहण कर मूलाधार में स्थित चतुर्दल-कमल की कर्णिका में आठ त्रिशूलों से युक्त चतुष्कोण में पीतवर्ण के पृथ्वी-मण्डल का ध्यान करे। इस मण्डल में चन्द्र, सूर्य और अग्नि की तीन रेखावाले त्रिकोण के अन्तर्गत स्वयम्भू लिङ्ग को वेष्टन करनेवाली, प्रसुप्त भुजगाकारा, साढ़े तीन फेरे डाले हुए, करोड़ों सूर्य की प्रभावाली, करोड़ों विद्युत्-प्रकाश-वाली, करोड़ों चन्द्र के समान शीतल, कमल तन्तु-जैसी सूक्ष्म, निराकार-स्वरूपिणी, पर-ब्रह्म-मयी, ज्ञानानन्द से मुदित मन-वाली, महा-योग-स्वरूपा, अधोमुखी कुण्डलिनी का ध्यान करे। फिर उसे 'हुं' बीज से जाग्रत् करे और मेरु-दण्ड के आगे ईडा तथा पिङ्गला के मध्य में सुषुम्णा-नाड़ी के भीतर स्थित

चित्रिणी-नाड़ी के मध्य मार्ग से ब्रह्म-नाड़ी में प्रविष्ट करावे। तब स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत चक्रों का भेदन कराते हुए उसे हृत्पद्म में ले जाय। वहाँ से विशुद्ध और आज्ञा-चक्र का भेदन कराते हुए शिर-स्थित सहस्र-दल-कमल की कर्णिका में विन्दु-रूप, ब्रह्म - विष्णु - शिवात्मक गुरुदेव के वाम भाग में साकार-रूपा, द्विभुजा, नानालङ्कार से भूषिता, परम-सुन्दरी उस कुण्डलिनी देवी को स्थापित करे। तदनन्तर पहले की भाँति मानसोपचारों से उनका पूजन करे। फिर सुस्थिर होकर अपने मूल-मन्त्र का अष्टोत्तर-शत वार जप करे और जप-फल पूर्व-व्रत् गुरुदेव को समर्पित कर उन दोनों को प्रणाम करे। फिर उसी मार्ग से कुण्डलिनी देवी को मूलाधार-चक्र में लावे और यथा-स्थान स्थापित कर उन्हें प्रणाम करे। यथा—

ॐ प्रकाशमानां प्रथमे प्रयाणे प्रति-प्रयाणेऽप्यमृताय-मानां
अन्तः-पदव्यामनुसरन्तीमानन्द-रूपाममलां प्रपद्ये ।।

इस प्रकार प्रणाम कर निम्न मन्त्र से प्रार्थना करे—

प्रातरारभ्य सायान्तं सायाह्नात् प्रातरं ततः ।
यत् करोमि जगन्मातस्तदस्तु तव पूजनम् ।।

त्रैलोक्य-चैतन्य-मयि सुरेशि, श्रीपार्वति त्वच्चरणाज्ञयैव ।
प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसार-यात्रामनुवर्तयिष्ये ।।

उक्त प्रकार आज्ञा लेकर श्वास के अनुसार पैर वढ़ाकर पृथिवी देवी को प्रणाम करे। यथा—

ॐ समुद्र-मेखले देवि ! पर्वत-स्तन - मण्डले !
विष्णु-पत्नि ! नमस्तुभ्यं पाद-स्पर्शं क्षमस्व मे ।

इसके वाद यथोपलब्ध कुमारी, ब्राह्मणी और ब्राह्मणों का दर्शन कर यह पढ़े—

अहं देवो न चान्योऽस्मि, ब्रह्मैवाहं न - शोक-भाक् ।
सच्चिदानन्द - रूपोऽहं नित्य-मुक्त - स्वभाव-वान् ।।
ब्रह्मानन्दः सदाऽऽनन्दः परं ज्ञान - विधायकः ।
तारका भक्त - आनन्दः पूर्वानन्दः सदा-शिवः ।।
भैरवोऽहं सुधाढ्योऽहं तत्त्वज्ञोऽहं कुल - स्त्रियः ।
गुरु - प्रसाद-वानस्मि शक्ति - साधक - सेवकः ।।
शतानन्दः कुमारी - दास एव च ।
कुमारी - बालकोऽहं च तारा - चरण - नायकः ।।

यह पढ़कर शयनागार से बाहर जाय ।

स्नान और सन्ध्या - वन्दन

१—स्नान

शौचादि से निवृत्त होकर नदी के तट पर जाय। वहाँ पहले वैदिक विधि से स्नान कर तान्त्रिक विधि से स्नान करे। यथा—

सारे जगत् को इष्ट-देवता के वर्ण के रूप में अनुभव करे। फिर कुश के रूप में सोने और चाँदी की अँगूठियाँ धारण करे। सोने की अनामा में और चाँदी की तर्जनी में पहने। इसके बाद तीन बार आचमन करे। यथा—

ॐ ह्रीं आत्म-तत्त्वाय स्वाहा
ॐ ह्रीं विद्या-तत्त्वाय स्वाहा
ॐ ह्रीं शिव - तत्त्वाय स्वाहा

'ह्रीं' बीज से ओठों का दो बार जल से मार्जन करे और फिर 'ह्रीं' बीज से हाथ धोकर उसी बीज से मुख, नासिका, चक्षु, श्रोत्र, नाभि, हृदय, शिर और स्कन्ध का स्पर्श करे। फिर दो बार आचमन कर मूल-मन्त्र का स्मरण करता हुआ मैल दूर करने के लिए स्नान करे। तदनन्तर आचमन कर अपने मूल-मन्त्र का विनियोग पढ़े और उसका ऋष्यादि, कर, षडङ्ग न्यास करके प्राणायाम करे। फिर ताम्र-पात्र में तिल, कुश और जल लेकर सङ्कल्प पढ़े, जिसके अन्त में निम्न वाक्य की योजना करे—

श्रीमत्तारा-प्रीतये अस्मिन्नमुक-जले स्नानमहं करिष्ये।

सङ्कल्प कर जल में त्रिकोण बनावे और निम्न मन्त्र पढ़कर सूर्य देवता से तीर्थों के उसमें आने की प्रार्थना करे—

ॐ ब्रह्मांडोदर - तीर्थानि करैः पृष्टानि ते रवे !
तेन सत्येन मे देव ! तीर्थं देहि दिवाकर ।।

फिर अंकुश-मुद्रा से सूर्य-मंडल से निम्न मन्त्र-द्वारा तीर्थों का आवाहन करे—

ॐ गङ्गे च यमुने ! चैव गोदावरि ! सरस्वति !
नर्मदे ! सिन्धु ! कावेरि ! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।[1]

फिर 'वं' बीज पढ़कर धेनु-मुद्रा से उस तीर्थ-जल को अमृतमय बनावे। तब मूल-मन्त्र से उसे योनि-मुद्रा दिखावे। फिर षडङ्ग के मन्त्रों से उसका सकलीकरण करे। यथा—

---

[1] गङ्गा में स्नान करते समय का विशेष मन्त्र यह है—

ॐ आवाहयामि त्वां देवि ! स्नानार्थमिह सुन्दरि !
एहि गंगे ! नमस्तुभ्यं सर्व - तीर्थ - समन्विते ।।

ॐ ह्रां हृच्छक्त्यं नमः । ॐ ह्रीं शिर-शक्त्यै नमः । ॐ ह्रूं शिखा-शक्त्यै नमः । ॐ ह्रैं कवच-शक्त्यै नमः । ॐ ह्रौं नेत्र-शक्त्यै नमः । ॐ ह्रः अस्त्र-शक्त्यै नमः ।

फिर उस त्रिकोण के भीतर के जल को मत्स्य-मुद्रा से आच्छादित करे । तब उसके ऊपर दस बार मूल-मन्त्र का जप करे । अपने को देवता के रूप में भावित कर शिर पर और फिर हृदय के ऊपर मूल-मन्त्र का दस-दस बार जप करे । सूर्य की ओर मुँह करके बारह बार जल का प्रक्षेप करे । फिर ऐसी भावना करे कि इष्ट-देवता के मुख से वारि-धारा निकल रही है और उसे उस साधक ने कलश-मुद्रा में ग्रहण कर मूल-मन्त्र पढ़ते हुए अपने सिर का सात बार उस जल से अभिषिञ्चन किया है । इस प्रकार त्रिकोण के जल से वह अपने सिर का अभिषिञ्चत करे । फिर यह भावना करे कि इष्ट-देवता के चरण-कमलों से निकलते हुए जल में उसने ऊपर को मुखकर तीन बार डुबकी लगाई है । इस प्रकार वह उसी जल में तीन बार डुबकी लगावे । तब फिर उठकर साधक आचमन करे और जल से बाहर आ देह को पोंछकर रक्त वस्त्र धारण करे । तदनन्तर शिखा अथवा वस्त्राञ्चल का बन्धन निम्न मन्त्र से करे---

ॐ मणि-धरि, वज्रिणि, महा-प्रतिसरे ! रक्ष-रक्ष हूँ फट् स्वाहा ।

इसके बाद शुद्ध यज्ञीय भस्म, श्वेत-रक्त चन्दन अथवा मृत्तिका से ललाट में तिलक लगावे ।

२—सन्ध्या-वन्दन

आसन पर बैठकर पूर्व-वत् तीन बार आचमन करे । पात्र में जल लेकर उसका संस्कार करे । यथा —

पात्र के जल में अधोमख त्रिकोण की भावना करे । उसमें

अंकुश-मुद्रा द्वारा सूर्य-मण्डल से तीर्थों का आवाहन यह मन्त्र पढ़कर करे—

ॐ गङ्गे ! च यमुने ! चैव गोदावरि ! सरस्वति !
नर्मदे ! सिन्धु ! कावेरि ! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।

फिर योनि-मुद्रा का प्रदर्शन करे। तब पुनः 'आत्म-तत्वाय स्वाहा' आदि मन्त्रों से तीन बार आचमन करे। फिर मूल-मन्त्र पढ़ता हुआ कुश-द्वारा उसी जल से सिर और पृथ्वी का सात-सात बार अभिषिञ्चन करे। तब अपने मूल-मन्त्र का षडङ्ग-न्यास करे। फिर बाँयें हाथ में जल लेकर दायें हाथ में उसे ढँके और उस जल को तेजोरूप में ध्यान करे। इसके बाद उसे 'हं यं रं लं वं' इन बीजों से तीन बार अभिमन्त्रित करे। फिर हाथ से टपकते हुए जल से मूल-मन्त्र पढ़ते हुए तत्व-मुद्रा से सिर का सात बार अभिषिञ्चन करे। शेष जल दाहने हाथ में लेकर ईडा (बाँयें नथने) से श्वास-द्वारा ऊपर खींचने की भावना करे। फिर यह भावना करे कि देह के भीतर स्थित पाप-पुरुष उस जल से धो गया है। तदनन्तर उस जल को कृष्ण-वर्ण के पाप-रूप में ध्यान कर बाँईं कोख में स्थित पाप-पुरुष को पिङ्गला (दाहने नथने) से बाहर लाकर सामने कल्पित शिला-खण्ड पर 'फट्' मन्त्र से पटक दे। इस प्रकार अपने को पाप-रहित समझकर हाथों को धो डाले। फिर आचमन कर जलाञ्जलि से एक-एक बार तर्पण करे। यथा—

ॐ श्रीगुरु अमुकानन्द-नाथ श्रीअमुकी देव्यम्बा श्रीपादुकां तर्पयामि नमः। ॐ श्रीपरम-गुरु अमुकानन्द - नाथ श्रीअमुकी देव्यम्बा श्रीपादुकां तर्पयामि नमः। ॐ श्रीपरापर - गुरु अमुका-नन्द-नाथ श्रीअमुकी देव्यम्बा श्रीपादुकां तर्पयामि नमः। ॐ

श्रीपरमेष्ठि-गुरु अमुकानन्द-नाथ श्रीअमुकी देव्यम्बा श्रीपादुकां तर्पयामि नमः। ॐ देवांस्तर्पयामि नमः। ॐ ऋषींस्तर्पयामि नमः। ॐ पित्रींस्तर्पयामि नमः।

इस प्रकार तर्पण कर इष्ट-देवता आदि का तर्पण करे —

मूलं श्रीमदुग्र-तारां तर्पयामि नमः स्वाहा——सात, पाँच या तीन बार।

ॐ स्त्रीं आं अक्षोभ्य स्वाहा, श्रीमदक्षोभ्य-भैरवं तर्पयामि नमः स्वाहा——तीन या एक बार।

मूलं सायुधां सवाहनां सपरिवारां श्रीमदक्षोभ्य-भैरव-सहितां श्रीमदुग्र-तारां तर्पयामि नमः स्वाहा——तीन या एक बार।

तर्पण करने के बाद सूर्य को उठकर जलाञ्जलि से अर्घ्य प्रदान करे। दूर्वा, अक्षत, रक्त पुष्प, श्वेत-रक्त चन्दन जल-सहित ताँबे के अर्घ्य-पात्र में लेकर नीचे का मन्त्र पढ़ प्रदान करे—

ॐ ह्रीं हंसः मार्तण्ड-भैरवाय प्रकाश-शक्ति-सहिताय इद-मर्घ्यं स्वाहा।

इस प्रकार सूर्य को अर्घ्य देकर सूर्य-मण्डल में इष्ट-देवता का ध्यान करे। फिर 'ॐ तारायै विद्महे महोग्रायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्'——इस सामान्य तारा-गायत्री को पढ़कर 'सूर्य-मण्डलस्थायै तारा-देव्यै श्रीमदुग्रतारा-देवतायै इदमर्घ्यं स्वाहा' यह वाक्य पढ़कर तीन बार पूर्ववत् अर्घ्य प्रदान करे। तदनन्तर सूर्य-मण्डल में इष्ट-देवता के निकट अक्षोभ्य-भैरव का ध्यान करे और 'ॐ महादेवाय विद्महे महा-घोराय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्'—यह शिव-गायत्री पढ़कर 'सूर्य-मण्डल-मध्यस्थ-वर्तिने शिव-चैतन्य-रूपिणे श्रीमदक्षोभ्य-भैरवाय इदमर्घ्यं स्वाहा'

यह वाक्य पढ़कर पूर्व-वत् अक्षोभ्य-भैरव को अर्घ्य-दान करे। फिर देवता की गायत्री का भी वहीं सूर्य-मण्डल में ध्यान करे। यथा, प्रातःकाल में—

उद्यद्भानु - सहस्राभां पुस्तकाक्ष - कराम्बुजाम् ।
कृष्णाजिनाम्बरां ब्राह्मीं ध्यायेत् तारकिताम्बरे ।।

मध्याह्न-काल में—

श्याम - वर्णां चतुर्बाहुं शङ्ख - चक्र-लसत्-कराम् ।
गदा - पद्म - धरां देवीं सूर्यासन - कृताश्रयाम् ।।

सायाह्न-काल में—

वरदां देवीं गायत्रीं संस्मरेद् बुधः ।
शुक्लां शुक्लाम्बर - धरां वृषासन - कृताश्रयाम् ।।
त्रिनेत्रां वरदां पाशं शूलं च नृ - करोटिकां ।
सूर्य - मण्डल-मध्यस्थां ध्यायेद् देवीं समभ्यसेत् ।।[1]

ध्यान कर चुकने पर पहले सामान्य तारा-गायत्री का अठारह वार जप करे और जप-फल गायत्री देवी को समर्पित करे। तदनन्तर निम्नलिखित विशेष गायत्री का एक सौ आठ या अठ्ठाइस वार जप करे—

---

[1] (१) एकजटा गायत्री के सम्बन्ध में ये ध्यान हैं—
प्रातःकाल में—

प्रातर्ब्राह्मीं रक्त - वर्णां द्वि-भुजां च कुमारिकां ।
कमण्डलुं तीर्थं - पूर्णामक्ष - मालां च बिभ्रतीं ।
कृष्णाजिनाम्बर - धरां हंसारूढां शुचि - स्मितां ।

मध्याह्न में—
श्याम-वर्णां वैष्णवीं च चतुर्भुजां शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म-धारिणीं ।

ह्रीं उग्रतारे ! विद्महे श्मशान-वासिनि ! धीमहि तन्न-स्तारे ! प्रचोदयात् ।

जप करने के वाद जप-फल-गायत्री देवो को समर्पित करे ।

गरुडासनां पीन-तुङ्ग-कुच - द्वन्द्व-वन - माला-विभूषिताम् ।
युवतीं सततं ध्यायेन्मध्ये मार्तण्ड-मण्डले ॥

सायाह्न में—

वरदां देवीं..........नृ-करोटिकां (उग्र-तारा - क्रमानुसार)
बिभ्रतीं कर-पद्मैश्च वृद्धां गलित-यौवनाम् ॥

एकजटा-गायत्री इस प्रकार है—

हं भगवत्येकजटे ! विद्महे घोर-दंष्ट्रे धीमहि तन्नस्तारे ! प्रचोदयात् ।

(२) नील-सरस्वती के सम्वन्ध में ये ध्यान हैं—

प्रातःकाल में—

आधार-कमले हुत-भुङ् - मण्डलोपरि वाग्वीज-रूपां विद्यां तां विद्युत्पटल-भास्वराम् । पुष्प-वाणेक्षु-कोदण्ड-पाशांकुश-लसत्-कराम् । स्वेच्छा-गृहीत-वज्र-पुष्पीं गुरु-विद्याक्षरात्मिकाम् ।

मध्याह्न में—

हृदयाम्भोज-कर्णिके सूर्य-मण्डले काम-वीजात्मिकां देवीमलक्तक-रसारुणाम् । प्रसून-चाण-पूर्णेक्षु-चाप - पाशांकुशान्विताम् । परितः स्वात्म-मुख्याभिः षट्-त्रिंशत्-शक्ति-सेविताम् ॥

सायंकाल में—

आज्ञा-सरोजस्थ - चन्द्रे चन्द्र-समद्युति शक्ति-वीजात्मिकां । चाप-वाण-पाशांकुशान्विताम् चिन्तयित्वा भगवतीं । नित्याभिः परिवारितां विन्दु-नित्याक्षराकारां रुचिरावरणान्विताम् ।

नील-सरस्वती-गायत्री इस प्रकार है—ॐ नील-सरस्वत्यै धीमहि शारदायै विद्महे तन्नः शिवे प्रचोदयात् ।

तदनन्तर प्राणायाम करे। फिर मूल-मन्त्र का एक सौ आठ वार जप कर उसका जप-फल इष्ट-देवता को समर्पित करे। तदनन्तर फिर प्राणायाम करे और इष्ट-देवता तथा गुरु को प्रणाम करे। इसके वाद संहार-मुद्रा से सूर्य-मण्डल से देवता को अपने हृदय में लाकर स्थापित करे। फिर तीर्थ-देवता को नमस्कार कर पूजा के लिए जल लेकर स्तोत्र, कवच आदि पढ़ता हुआ पूजा-गृह को प्रस्थान करे।

नित्यार्चन

१—पूजा-स्थान-शोधनादि

स्नान कर स्वच्छ वस्त्र धारण करे और पूजा-गृह के द्वार पर जाय। वहाँ पहले '३ॐ मणि-धरि वज्रिणि शिखरिणि सर्व-वशङ्करिणि हुं फट् स्वाहा' यह मन्त्र पढ़कर शिखा-वन्धन करे। फिर '३ॐ ह्रीं स्वाहा' से आचमन करे। इसके वाद श्री गुरुदेव का पूजन करे। फिर पूजा-गृह के द्वार पर पहुँचकर '३ॐ वज्रो-दके हूं फट् स्वाहा' यह मन्त्र पढ़कर शुद्ध स्थान पर जल-पात्र रख दे। उस जल से थोड़ा जल एक दूसरे पात्र में लेकर '३ॐ ह्रीं स्वाहा' इस मन्त्र से हाथ धोवे और 'ह्रीं विशुद्धे ! सर्व-पापानि शमयाशेष-विकल्पमपनय हूं फट् स्वाहा' इस मन्त्र से पैर धोवे। तव मूल-मन्त्र पढ़कर सिंदूर तथा केसर का तिलक और भस्म का त्रिपुण्ड्र लगावे। फिर कुल-कुश की अर्थात् सोने और चाँदी की अंगूठियाँ अनामा और तर्जनी में यथा-संख्या धारण करे। फिर '३ॐ ह्रीं स्वाहा' इस मन्त्र से पुनः आचमन करे। इसके वाद पीठों का ध्यान करे। यथा—

पहले श्मशान का, फिर उसमें कल्प-वृक्ष का स्मरण करे।

उस कल्प-वृक्ष को जड़ पर नाना मणियों और आभूषणों से विभूषित ऐसे रत्न-पीठ की कल्पना करे, जिसके चारों ओर मुनि व देवता बैठे हुए हों, शिवायें मांस और हड्डियों को चबाती हुई आनन्द-मग्न हों और चारों दिशाओं में शव, मुण्ड, अस्थि से युक्त चितायें दहकती हों। इस प्रकार के पीठ के मध्य में इष्ट-देवता का ध्यान करे।

तदनन्तर तीन वार आचमन करे। यथा–

ॐ उग्र-तारायै स्वाहा, ॐ एक-जटायै स्वाहा, ॐ नील-सरस्वत्यै स्वाहा।

फिर 'ॐ ह्रीं स्वाहा' यह मन्त्र पढ़कर जल से हाथों का शोधन करे। तब 'स्त्रीं हूँ' इस मन्त्र से ओठों का दो वार मार्जन करे। फिर 'फट्' से हाथों को धोवे। इसके वाद निम्न मन्त्रों से यथोक्त अङ्गों में न्यास करे–

मुख में ॐ वैरोचनाय नमः, दक्ष नासा में ॐ शङ्ख-पाण्डुराय नमः, वाम नासा में ॐ पद्म-नाभाय नमः, दक्ष चक्षु में ॐ असिताभाय नमः, वाम चक्षु में ॐ नामकाय नमः, दक्ष कर्ण में ॐ मामकाय नमः, वाम कर्ण में ॐ पाण्डुराय नमः, नाभि में ॐ तारकाय नमः, हृदय में ॐ पद्मान्तकाय नमः, शिर में ॐ यमान्तकाय नमः, दक्ष हस्त में ॐ विघ्नान्तकाय नमः, वाम हस्त में ॐ नरकान्तकाय नमः।

तदनन्तर योनि-मुद्रा वनाकर 'ॐ पवित्र-वज्र-भूमे! हूँ फट् स्वाहा' फिर 'ॐ रक्ष रक्ष मां हूँ फट् स्वाहा' मन्त्र से जल छिड़ककर भूमि का अभिषिञ्चन करे। तब उस स्थान पर विष्टरादि आसन विछावे। आसन के नीचे एक त्रिकोण बनावे। फिर 'ॐ आः सुरेखे वज्र-रेखे हूँ फट् स्वाहा' मन्त्र पढ़कर आसन

पर चतुरस्र बनावे। तब 'ॐ ह्रीं आधार-शक्ति-कमलासनाय नमः' से गन्ध-पुष्प द्वारा आसन की पूजा करे। इसके बाद वीरादि आसन से उस पर स्वयं बैठे और विजया का शोधन करे। यथा–

२—विजया-ग्रहण

पहले विनियोग पढ़े—ॐअस्य संविदा-मन्त्रस्य श्रीदक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्तिः छन्दः, सदा-शिवो देवता, संवित्-सान्निध्यारोपणे विनियोगः।

विनियोग के बाद ऋष्यादि का न्यास करे–

शिरसि श्रीदक्षिणामूर्ति ऋषये नमः। मुखे पंक्तिश्छन्दसे नमः। हृदि सदाशिव-देवतायै नमः। अञ्जलौ संवित्-सान्नि-ध्यारोपणे विनियोगाय नमः।

न्यास करने के बाद संविद् देवी का ध्यान करे—

सिद्धाढ्यां शिव-मोहिनीं कर-लसत्-पाशांकुशां भैरवीं।
भक्ताभीष्ट-फल-प्रदां सु-कुशलां संसार-बन्ध-च्छिदाम्।
पीयूषाम्बुधि-मथनोद्भव-रसां संविद्-विकासास्पदां।
वीराराधित-पादुकां सुविजयां ध्यायेज्जगन्मोहिनीम्॥

ध्यान कर चुकने पर संवित् का शोधन करे। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के भेद से संवित् चार प्रकार की होती है, जिनके फूलों का रंग क्रमशः श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण होता है। शोधन के मन्त्र ये हैं----

सिद्धि-मूल - क्रिये देवि ! मूलाधार - प्रबोधिनि !
राज-प्रजा - वशङ्करि ! शत्रु-कण्ठ - त्रिशूलिनि॥

ऐं क्षत्रियायै नमः स्वाहा

अज्ञानेन्धन - दीप्ताग्ने ज्वालाग्ने ज्ञान - रूपिणि !
आनन्दास्याहुतिं मत्वा सम्यक् ज्ञानं प्रयच्छ मे ।।
ह्रीं वैश्यायै नमः स्वाहा

नमस्यामि नमस्यामि योग-मार्ग-प्रदर्शिनि !
त्रैलोक्य-विजये मातः ! समाधि-फलदा भव ।।
क्लीं शूद्रायै नमः स्वाहा ।

ॐ संविदे ब्रह्म-सम्भूते ब्रह्म-पुत्रि ! सदाऽनघे !
भैरवानां च तृप्त्यर्थं पवित्रा भव सर्वदा ।।
ॐ ब्राह्मण्यै नमः स्वाहा ।

सभी प्रकार की संविदा का सामान्य शोधन-मन्त्र यह है—

ह्रीं श्रीं ऐं अमृते अमृतोद्भवे अमृत-वर्षिणि महत्-प्रकाश-युक्ते अमृतमाकर्षयाकर्षय श्रीअमुकी-देवीं मे वशमानय स्वाहा ।

उक्त मन्त्र को पढ़कर संवित् को अभिमन्त्रित करे। फिर 'हूँ' से उसका अवगुण्ठन करे; 'वं बीज से धेनु-मुद्रा दिखाकर उसे अमृत-मय बनावे; योनि-मुद्रा दिखाकर उसको नमस्कार करे; मत्स्य-मुद्रा से उसे ढँककर षडंग के मन्त्रों से उसका सकलीकरण करे; 'फट्' मन्त्र से नीचे से ऊपर तक तीन बार ताल-ध्वनि करे; अपने सिर के चारों ओर छोटिका मुद्रा से दसों दिशाओं का बन्धन करे। इसके बाद पात्र के ऊपर मूल-मन्त्र का दस बार जप करे।

तदनन्तर तत्व-मुद्रा से पात्र से विजया लेकर सिर में श्रीगुरु का तीन बार तर्पण करे—ऐं ह्रीं श्रीं अमुकानन्दनाथ रक्त-शक्त्यम्बा श्रीपादुकां तर्पयामि नमः ।

फिर हृदय में इष्ट-देवता का सात या तीन बार तर्पण करे—

मूलं श्रीउग्रतारा-देवीं तर्पयामि स्वाहा ।

फिर संवित् को इष्ट-देवता को निवेदित करे—

मूलं एषा विजया श्रीउग्रतारा-देव्यै निवेदयामि नमः ।

इसके बाद मूल-मन्त्र का १०८ बार जप करे। फिर जप-फल 'ॐ गुह्याति०' इस मन्त्र से देवता को समर्पित करे। तब ज्येष्ठ-क्रम के अनुसार उपस्थित वीरों और शक्तियों को अलग-अलग पात्र प्रदान करे और विजया का ध्यान, स्तवन तथा नमस्कार कर उसका पान करे। ध्यान और स्तवन ये हैं—

कालिन्दीं जल-सन्दोहं क्लान्ति - सन्ताप - हारिणीं ।
वराभय - समायुक्तां सव्येतर - भुज - द्वयाम् ।।
नाना - रोग - हरां रौद्रीं सर्व - सौख्य - प्रदायिनीं ।
विजयां त्वामहं वन्दे सिद्धां ज्ञान - मयीं पराम् ।।
सुमित्रा भूतिनी देवी विजया चर्चिता परा ।
अमृता तुलसी तुङ्गा तेजोमयी सुरेश्वरी ।।
एतानि दश नामानि करे कृत्वा यः पठेत् ।
दुःख - दारिद्रय-नाशः स्यात् परं ज्ञानमवाप्नुयात् ।।
सम्विद्-देवि! गरीयसीं गुण-निधिं वैगुण्य-विध्वंसिनीं ।
माया-मोह-मदान्धकार-शमनीं ताप - त्रयोन्मूलिनीं ।।
वन्दे वीर-मुखाम्बुजे विलसिनीं सम्वेदिनीं दीपिकां ।
ब्रह्म-ज्ञान-मये विवेक - विजये विज्ञान - मूर्त्यै नमः ।।

इस प्रकार नमस्कार कर और विजया का पात्र हाथ में ले यह मन्त्र पढ़े—

ऐं वद वद वाग्वादिनि मे जिह्वाग्रे स्थिरा भव । सर्व-सत्व-वशङ्करि स्वाहा ।

फिर यह भावना करे कि कुण्डलिनी देवी मूलाधार से उठकर मेरी जीभ के अग्र भाग पर स्थित है । तब विजया उसी के मुख में हुत करे । तदनन्तर जल और ताम्बूल देवता को प्रदान कर स्वयं ग्रहण करे ।

३—विघ्नोत्सारण आदि क्रियायें

विजया स्वीकार करने के वाद साधक विघ्नों का उत्सारण करे । यथा—हाथ में पुष्पाक्षत लेकर 'ॐ सर्व-विघ्नानुत्सारय हूँ फट् स्वाहा' यह मन्त्र पढ़कर पुष्पाक्षत इधर-उधर फेंक दे । इसके बाद 'फट्' मन्त्र से अपने सामने नीचे से ऊपर तीन बार ताल-ध्वनि करे । फिर अपने चारों ओर दिव्य दृष्टि से देखकर दिव्य विघ्नों को, 'अस्त्राय फट्' मन्त्र से जल फेंककर अन्तरिक्ष के विघ्नों को और बांयें पैर की एड़ी से भूमि में 'फट्' मन्त्र से तीन बार आघात कर भूमि के विघ्नों का वारण करे ।

इसके वाद वांएँ कान के ऊपर हाथ जोड़कर निम्न मन्त्रों से गुरुओं को नमस्कार करे—'ॐ गुरवे नमः, ॐ परम - गुरवे नमः, ॐ परापर-गुरवे नमः, ॐ परमेष्ठि - गुरवे .नमः' । फिर दाहने कान के ऊपर हाथ जोड़कर 'गां गणेशाय नमः' इस मन्त्र से गणेश को नमस्कार करे । फिर बीच में 'मूलं श्रीउग्र-तारायै नमः' से हाथ जोड़कर इष्ट-देवता को प्रणाम करे । अब 'फट्' मन्त्र से गन्ध और पुष्प हाथों से मलकर हाथों का शोधन करे । फिर नीचे से ऊपर तक 'फट्' मन्त्र से तीन बार ताल देकर और सिर के चारों ओर,चुटकी वजाकर दसों दिशाओं का

वन्धन करे। तव 'ॐ मणि-धरि वज्रिणि महा-प्रतिसरे हूँ फट् स्वाहा' इस मन्त्र से वस्त्रांचल में गाँठ लगावे। इसके बाद 'ॐ आःसुरेखे हूँ फट स्वाहा' इस मन्त्र का व्यापक न्यास कर शरीर, वाणी और चित्त का शोधन करे। तव निम्न-लिखित मन्त्र से पुष्पों का शोधन करे—'ॐ पुष्प-केतु राजार्हते शताय सम्यक् सम्वर्धाय शताभिषेके हूँ फट् स्वाहा। ॐ पुष्पे पुष्पे सु-पुष्पे पुष्प-सम्भवे पुष्पं चयावसंकीर्णे हूँ फट् स्वाहा।'

४—यन्त्र-राज-स्थापनादि क्रियायें

पुष्पों का शोधन करने के वाद स्वर्ण आदि के पीठ पर इष्ट-देवता के यन्त्र-राज को लिखे। यन्त्र गोरोचन और कुंकुम आदि से सोने की शलाका या मालूर के काँटे द्वारा 'आः सुरेखे वज्र-रेखे हूँ फट् स्वाहा नमः' इस मन्त्र को पढ़कर लिखे। फिर यन्त्रराज को अपने सामने सिंहासन पर स्थापित करे। तदनन्तर सामान्यार्घ्य-पात्र की स्थापना करे। यथा—

अपनी बाईं ओर त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र का मण्डल वनावे। 'ॐ आधार-शक्तये नमः' मन्त्र से उसकी पूजा करे। फिर 'फट्' मन्त्र से आधार-सहित पात्र को धोकर 'नमः' से उन्हें मण्डल पर स्थापित करे। तव उस पात्र को 'नमः' मन्त्र से जल-द्वारा पूर्ण करे। फिर निम्न मन्त्र से अंकुश मुद्रा-द्वारा सूर्य-मण्डल से उस जल में तीर्थों का आवाहन करे—

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति !
नर्मदे सिन्धु कावेरि ! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।

तदनन्तर 'ॐ' का उच्चारण कर गन्ध और पुष्प उस जल में छोड़े। फिर 'हूँ' से उसका अवगुण्ठन, 'वं' से धेनु-मुद्रा-द्वारा उसका अमृतीकरण और मत्स्य-मुद्रा द्वारा उसका आच्छादन कर उस पर 'ॐ' का दस बार जप करे।

अब सामान्यार्घ्य के जल को पूजा-मण्डल के द्वारों पर छिड़के और द्वार-देवताओं की पूजा करे। यथा—

यन्त्र-राज के पीठ के पूर्व-द्वार में 'ॐ ह्रीं गां गणेशाय नमः' आदि से पूजन करे। उनके बीच में श्मशानादि पीठों की क्रमशः पूजा करे।

इसके वाद भूत-शुद्धि करे। यथा—

५ भूत-शुद्धि

'वं' वीज से अपने चारों ओर जल की धार छोड़े और वह्नि के प्राकार का ध्यान कर अपनी गोद में ऊपर को हथेलियाँ रख कर सावधान होकर बैठे। 'हूँ' वोज का उच्चारण कर मूला-धार में स्थित कुण्डलिनी को उठावे। तव 'हंस' मन्त्र से हृदय से कलिकाकार जीवात्मा को मूलाधार की कुण्डलिनी के साथ लेकर मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्ध और आज्ञा इन छहों चक्रों का भेदन करावे। फिर उन्हें शिर में स्थित अधोमुख सहस्र-दल कमल की कर्णिका में विराजमान परम-शिव में नियोजित करे। वहीं पर पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द, नासिका, जिह्वा, चक्षु, त्वचा, श्रोत्र, वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ, प्रकृति, मन, बुद्धि और अहङ्कार—इन २४ तत्वों के लय होने की भावना करे।

इसके वाद कुम्भक-द्वारा रक्त-वर्ण के 'ह्रीं' वीज का नाभि-स्थान में ध्यान करे और उस वीज का चौंसठ बार जपकर उससे निकली हुई अग्नि से लिंग-शरीर का दहन करे। फिर उसी प्रकार हृदय में पीत-वर्ण के 'स्त्रीं' वीज का ध्यान कर उससे निकली हुई वायु से लिंग-शरीर की भस्म को श्वास-मार्ग से बाहर निकाल दे। तब श्वेत - वर्ण के 'हूँ' वीज का शिर में ध्यानकर उसका चौबीस बार जप करे और उससे निकले हुए

अमृत से लिंग-शरीर को अस्थि को प्लावित करे।

इस प्रकार सारे शरीर को समस्त पापों से रहित समझकर उसे उसी अमृत से पुनः प्लावित करे। फिर उस अमृत में आकार से रक्त-पङ्कज, उसके ऊपर टङ्कार से श्वेत-कमल, उसके ऊपर नील-वर्ण के अपने ऊपर 'हूँ' बीज तथा उसके ऊपर इष्ट-देवता का ध्यान करे। यथा—

प्रत्यालीढ-पदार्पितांघ्रि शव-हृत्-घोराट्टहासा-परा।
खड्गेन्दीवर-कर्तृ-खप्पर-भुजा हूंकार-बीजोद्भवा ॥
खर्वा नील-विशाल-पिङ्गल-जटा-जूटोग्र-नागैर्युता।
जाड्य-न्यस्य कपालके त्रि-जगता हंत्युग्रतारा स्वयं॥[१]

इस प्रकार ध्यान कर अपने सिर पर पुष्प छोड़कर उस पर अपना हाथ रखे और 'आं ह्रीं क्रों स्वाहा' इस मन्त्र का दस बार

१—एक-जटा का ध्यान—

प्रत्यालीढ-पदां घोरां मुण्ड - माला - विभूषिताम्।
खर्वां लम्बोदरीं भीमां व्याघ्र - चर्मावृतां कटौ ॥
नव - यौवन - सम्पन्नां पञ्च - मुद्रा - विभूषितां।
चतुर्भुजां ललज्जिह्वां महा - भीमां वर - प्रदां ॥
खड्ग - कर्तृ - समायुक्तां सव्येतर - भुज - द्वयां।
कपालोत्पल - संयुक्तां सव्य - पाणि - युगान्विताम् ॥
पिङ्गोग्रैक-जटां ध्यायेन्मौलावक्षोभ्य-भूषिताम्।
बालार्क - मण्डलाकारां लोचन - त्रय - भूषिताम् ॥
ज्वलच्चिता - मध्य - गतां घोर - दंष्ट्रां करालिनीं।
सावेश - स्मेर - वदनां स्त्र्यलङ्कार - विभूषितां ॥
चन्द्र - सूर्याग्नि - नयनां मद्य - पान - प्रमत्तिकां।
विश्व-व्यापक - तोयान्तः - श्वेत - पद्मोपरि-स्थितां ॥

जप करे। तदनन्तर अपने हृदय पर लेलिहानी मुद्रा स्थापित कर इष्ट-देवता का अपने हृदय में निम्न मन्त्र पढ़कर जीव-न्यास करे–

आं ह्रीं क्रों स्वाहा श्रीमदुग्रतारायाः प्राणा इह प्राणाः; आं

२–नील-सरस्वती का ध्यान–

तस्योपरि महा-देवीं खर्वा नील - घन - प्रभां।
लम्बोदरीं महा-देवीं व्याघ्र - चर्म - नितम्बिनीं ॥
पीनोन्नत - पयो-भारां रक्त - वर्तुल - लोचनां।
पिङ्गोग्रैक - जटा - जूटां नील - नाग - विभूषितां ॥
नीलोत्पल - लसन्मौलि - बद्ध - जूटां भयङ्करीं।
श्वेतास्थि-पट्टिका - युक्तां कपाल - पञ्च - शोभितां ॥
ललाटे रक्त - नागेन कृत - कर्णावतंसिनीं।
अति - शुभ्र - महा - नाग-कृत - हारां महोज्ज्वलां ॥
दूर्वा - दल - श्याम - नाग - कृत - यज्ञोपवीतिनीं।
चतुर्भुजां रक्त - मांस - खण्ड - मण्डित - मुष्टिनीं ॥
जटा - जूटाक्ष - सूत्रेण शोभितां तीक्ष्ण - धारया।
खड्गेन दक्षिणस्योर्ध्वे शोभिनीं भीम - नादिनीं ॥
तदधस्ताद् - बीज - वृन्त - कर्तृकालंकृतां पराम्।
वामोर्ध्वे रक्त - नालेषद् - विकाशित - मनोहरं ॥
दधतीं नील - पद्मं च तदधस्तात् - कपालकं।
जगतां जाड्य - संयुक्तं दधतीं कुन्द - सन्निभाम् ॥
धूम्राभ - नाग - सन्दोह - कृत - केयूर - सद् - भुजां।
सुवर्ण - वर्ण - नागेन कङ्कणोज्ज्वल - पाणिकाम् ॥
शुभ्र - वर्ण - महादेव - शव - हृद् - विमलासनाम्।
निर्यन्त्रण - भिया तद्वत् - संकुचत् - प्रपदात्मिकाम् ॥
शव - पाद - द्वयारूढ़ - वाम - पादां हसन्मुखीम्।
कुन्दाभ - नाग संशोभि - कटि - सूत्रां त्रिलोचनाम् ॥

ह्रीं क्रों स्वाहा श्रीम-दुग्रतारायाः सर्वेन्द्रियाणि, आं ह्रीं क्रों स्वाहा श्रीमदुग्र-तारायाः वाङ्-मनश्चक्षु-श्रोत्र-घ्राण-प्राण इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।

इस प्रकार देवता का जीव-न्यास कर मानसोपचारों से उसका पूजन करे । पहले हृदय में सुधा-सागर का, उसके बीच में सुवर्ण-वालुका-मय मणि-द्वीप का, उसमें पारिजात वृक्षों के वन का, उसमें रत्नों के मन्दिर का, उसमें श्मशान का, उसमें कल्प-वृक्ष का, उसकी जड़ के ऊपर नाना मणियों से विभूषित और चारों दिशाओं में शव-मुण्ड, चिताङ्गार तथा अस्थि-पंजर से युक्त मणि-पीठ का ध्यान करे । यत्न-पूर्वक साधक उस द्वीप में अपने स्थिर होने की भावना करे ।

इसके वाद साधक व्रह्म-रन्ध्र में जगद्गुरु महा-देव का ध्यान करे । उनके वाम भाग में उग्रतारा का ध्यान कर उनको प्रणाम करे । व्रह्म-रन्ध्र में जो विन्दु है, वह पुष्कर तीर्थ के समान है । सव मलों का दूर करनेवाला वहाँ का स्नान है । साधक प्रयत्न करके उसमें स्नान करे । सुषुम्णा नाड़ी के मध्य में वधू-जीव 'स्त्रीं' के रूप में हृदय में शिव-तीर्थ का स्मरण कर साधक उसमें स्नान करे । अपने हृदय में सिंहासन का ध्यान करे । उस पर ज्ञानानन्द-स्वरूपवाली शय्या की भावना करे । उस पर दिगम्वर

ईषद् - रक्तेन नागेन कृत - नूपुर - पल्लवाम् ।
सद्यश्छिन्न - गलद् - रक्त - नृमुण्डैः रक्त - भूषणैः ।।
अन्योन्य - केश - ग्रथितैः पाद - पद्म - प्रलम्बितैः ।
पञ्चाशद्भिर्महा - माला - शोभितां परमेश्वरीम् ।।
ज्वलच्चिता - मध्य - गतां द्वीपि - चर्मोद्भवांशुकां ।
अक्षोभ्य - नाग - सम्बद्ध - जटा - जूटां वर - प्रदां ।।
सुवेश - स्मेर - वदनां ललज्जिह्वां करालिनीम् ।।

शिव का ध्यान करे। वहीं उनके सान्निध्य में तप्त काञ्चन के वर्णवाली और नानालङ्कार-भूषिता तथा दिगम्बरा इष्ट-देवता की भावना करे। फिर उन्हें विपरीत-रति की अवस्था में ध्यान कर कुल-सन्ध्या का समापन करे। इस प्रकार तीनों कालों में कुल-सन्ध्योपासन करके साधक अनायास ही मनोकामना का लाभ करता है।

९—अन्तर्यजन

अब साधक अन्तर्यजन करे। यथा—ब्रह्म-रन्ध्र में चन्द्रमा-रूपी पात्र से इष्ट-देवता का तर्पण करे। फिर वहीं पर स्थित सूर्य-रूपी पात्र से इष्ट-देवता के सिर में अर्घ्य प्रदान करे। फिर दया, ज्ञान, क्षमा, इन्द्रिय-निग्रह, ज्ञान - दान, पुण्य, अहिंसा, आचार, स्वयम्भू और आनन्द-रूप पुष्प—ये दस पुष्प देवता को समर्पित करे। तब त्रिलोकस्थ भद्र-द्रव्यों से इष्ट-देवता का पूजन करे। फिर मांस-मत्स्य-युक्त तत्व देवता को प्रदान करे।

इस प्रकार पूजन कर वर्ण-माला से इष्ट-मन्त्र का जप करे। जप से पहले अन्तर्मातृका-न्यास करे। यथा—

हृदय के षोडश-दलवाले पद्म में सोलह स्वरों का न्यास करे। यह न्यास-पूर्व दिशा से प्रारम्भ करे और आग्नेय कोण के दल में समाप्त करे। फिर आधार के चतुर्दल पद्म में 'क ख ग घ' इन चार वर्णों का न्यास करे। इस न्यास में पश्चिम के दल से प्रारम्भ कर उत्तर के दल में समाप्त करे। तब लिङ्ग-मूल के छः दलवाले पद्म में उत्तर दिशा के क्रम से 'ङ च छ ज झ ञ' इन छः वर्णों का न्यास करे। नाभि-मूल के अष्ट-दल-कमल में 'ट' से 'द' तक के आठ वर्णों का न्यास करे। यह न्यास दक्षिण दिशा के दल से प्रारम्भ करे। फिर तालु-मूल के चौदह दलवाले कमल में 'ध' से 'स' तक के चौदह वर्णों का न्यास करे। यह न्यास यम की दिशा से प्रारम्भ करे। फिर ललाट और भौंह के

बीच के द्वि-दल में 'ह क्ष' वर्णों का न्यास करे। पहले दाहिनी ओर, फिर बाईं ओर के दल में न्यास करे। द्वादशार में 'क' से लेकर 'ठ' तक के बारह वर्णों का न्यास करे। फिर सहस्रार में 'अ' वर्ण से लेकर विसर्ग तक के सारे वर्णों का न्यास करे।

इस प्रकार पहले अन्तर्मातृका-न्यास करके इष्ट-मन्त्र का वर्ण-माला में जप करे। यह वर्ण-माला 'अ' से 'क्ष' तक है। 'ह' और 'क्ष' के बीच में 'ळ' है और नाद तथा विन्दु से युक्त है। इस माला से लोम-विलोम के क्रम से १०८ बार जप करे।

जप कर चुकने पर साधक अपने हृदय में सर्व वर्णों से युक्त त्रिकोण का ध्यान करे और उसमें कामाख्या योनि-मण्डल की भावना करे। फिर नील-कमल का स्मरण कर उसकी पंखड़ियों की उस योनि-कुण्ड में मूल-मन्त्र से सोलह आहुतियाँ प्रदान करे। तब निम्न मन्त्रों से आहुतियाँ प्रदान करे—

(१) मूलं नाभि-चैतन्य-रूपाग्नौ हविषा मनसा स्रुवा,
ज्ञान-प्रदीपिते नित्यमक्ष-वृत्तिर्जुहोम्यहं स्वाहा।

(२) मूलं धर्माधर्म-हविर्दीप्तिः आत्माग्नौ मनसा स्रुवा,
सुषुम्ना-वर्त्मना नित्यमक्ष-वृत्तिर्जुहोम्यहं स्वाहा।

(३) मूलं प्रकाशाकाश-हस्ताभ्यामवलम्ब्योन्मनीं स्रुवा,
धर्माधर्म-कला-स्नेह-पूर्णमग्नौ जुहोम्यहं स्वाहा।

(४) मूलं अन्तर-निरन्तर-निरिन्धन-मेधमाने, मायान्धकार-परिपन्थिनि सम्विदग्नौ, कस्मिंश्चिदद्भुत-मरीचि-विकाश-भूमौ विश्वं जुहोमि वसुधा दिशि वावसानं स्वाहा।

(५) मूलं इदन्ता पात्रं भविता महन्ता परमामृतम्,
पूर्णाहुति-मये वह्नौ पूर्ण-होमं जुहोम्यहं स्वाहा।

अब उक्त वर्ण-माला से इष्ट-मन्त्र का १०८ बार पुनः जप करे। विशेष फल हेतु षोढा-न्यास करे। अन्त में मूल-मन्त्र से व्यापक न्यास करे।

तदनन्तर तीन बार मानसिक प्रदक्षिणा कर प्रणाम करे। इसके बाद बहिर्मातृका-न्यास करे। यथा—

७--बहिर्मातृका-न्यास

विनियोग—अस्य सृष्टि-मातृका-मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः,गायत्री छन्दः, श्रीमातृका-सरस्वती देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, सर्गः कीलकं, सृष्टि-मातृका-न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास—शिरसि ब्रह्मणे ऋषये नमः। मुखे गायत्री-छन्दसे नमः। हृदि श्री मातृका-सरस्वती-देवतायै नमः। गुह्ये हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः। पादयोः स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः। सर्वाङ्गे सर्गाय कीलकाय नमः। सृष्टि-मातृका-न्यासे विनियोगः।

कराङ्ग-न्यास--अं कं-५ आं अंगुष्ठाभ्यां नमः। इं चं-५ ईं तर्जनीभ्यां स्वाहा। उं टं-५ ऊं मध्यमाभ्यां वषट्। एं तं-५ ऐं अनामिकाभ्यां हुँ। ओं पं-५ औं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। अं यं-१० अः करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास—अं कं-५ आं हृदयाय नमः। इं चं-५ ईं शिरसे स्वाहा। उं टं-५ ऊं शिखायै वषट्। एं तं-५ ऐं कवचाय हुँ। ओ पं-५ औं नेत्र-त्रयाय वौषट्। अं य-१० अः अस्त्राय फट्।

पञ्चाशल्लिपिभिर्विभक्त-मुख-दोः यन्मध्य-वक्ष-स्थलां,
भास्वन्मौलि-निबद्ध-चन्द्र-शकलामापीन-तुङ्ग-स्तनीम्।
मुद्रामक्ष-गुणं सुधाढ्य-कलशं विद्यां च हस्ताम्बुजैः,
बिभ्राणां विशद-प्रभां त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये॥

अं	नमः	ललाटे	तर्जनी व मध्यमा से
आं	,,	मुख-वृत्ते	मध्यमा व अनामिका से
इं	,,	दक्ष-नेत्रे	मध्यमा-अंगुष्ठ से
ईं	,,	वाम-नेत्रे	मध्यमा-अंगुष्ठ से
उं	नमः	दक्ष-कर्णे	अनामा - अंगुष्ठ से

ऊं	नमः	वाम-कर्णे	अनामा - अंगुष्ठ से
ऋं	,,	दक्ष-नासायां	तर्जनी - अंगुष्ठ से
ॠं	,,	वाम-नासायां	तर्जनी - अंगुष्ठ से
लृं	,,	दक्ष-गण्डे	अनामा-मध्यमा से
लॄं	,,	वाम-गण्डे	अनामा-मध्यमा से
एं	,,	ऊर्ध्वोष्ठे	अंगुष्ठ से
ऐं	,,	अधरोष्ठे	अंगुष्ठ से
ओं	,,	ऊर्ध्व-दन्त-पंक्तौ	मध्यमाग्र से
औं	,,	अधो-दन्त-पंक्तौ	मध्यमाग्र से
अं	,,	ब्रह्म-रन्ध्रे	अंगुष्ठ से
अः	,,	मुखे	कर-तल से
कं	,,	दक्ष-बाहु-मूले	दक्ष-बाहु-मूल से पृष्ठ
खं	,,	दक्ष-कर्पूरे	तक हरि-मुद्रा से सब
गं	,,	दक्ष-मणि-बन्धे	अंगों में न्यास करे।
घं	,,	दक्ष-अंगुलि-मूले	
ङं	,,	दक्ष-अंगुलि-अग्रे	
चं	,,	वाम-बाहु-मूले	
छं	,,	वाम-कूर्परे	
जं	,,	वाम-मणिबन्धे	
झं	,,	वाम-अंगुलि-मूले	
ञं	,,	वाम-अंगुलि-अग्रे	
टं	,,	दक्ष-पाद-मूले	
ठं	,,	दक्ष-जानुनि	
डं	,,	दक्ष-गुल्फे	
ढं	,,	दक्ष-पादांगुलि-मूले	
णं	,,	दक्ष-पादांगुलि-अग्रे	
तं	,,	दक्ष-पाद-मूले	

थं नमः वाम जानुनि
दं नमः वाम गुल्फे — दक्ष-बाहु-मूल से पृष्ठ तक
धं ,, वाम-पादांगुलिमूले — हरि-मुद्रा से सब अंगों
नं ,, वाम-पादांगुलि-अग्रे — में न्यास करे।
पं ,, दक्ष-पार्श्वे
फं ,, वाम-पार्श्वे
बं ,, पृष्ठे
भं ,, नाभौ — मूँठी बाँध कर मध्यमा अंगुलि
मं ,, उदरे — को फैलाकर न्यास करे।
यं ,, हृदि — हृदय से लेकर मुख तक
रं ,, दक्षांशे — करतल से न्यास करे।❋
लं ,, ककुदि
वं ,, वामांशे
शं ,, हृदयादि दक्ष-हस्ते
षं ,, हृदयादि वाम-हस्ते
सं ,, हृदयादि दक्ष-पादे
हं ,, हृदयादि वाम-पादे
लं ,, हृदयादि-जठरे
क्षं ,, हृदयादि मुखे

❋ सृष्टि-क्रम के मातृका-न्यास के वाद साधक लोग स्थिति-और संहार-क्रम से भी मातृका-न्यास करते हैं। वे दोनों क्रम संक्षेप में यहाँ दिये जाते हैं।

स्थिति-मातृका-न्यास—सृष्टि-मातृका-न्यास के विनियोग में यथा-स्थान 'स्थिति-मातृका-न्यास' पद को जोड़कर विनियोग पढ़ें। फिर पूर्व-वत् ऋष्यादि, कराङ्ग-न्यासों को करके ध्यान करे। यथा—

८—द्वादश योनि-मुद्रा-न्यास

ॐ योनि-मुद्रायै नमः—मूर्ध्नि
ॐ योनि-नित्यायै नमः—वक्त्रे
ॐ योनि-रूपायै नमः—कण्ठे
ॐ योनि-मध्यायै नमः—हृदये
ॐ योनि-सिद्धायै नमः—उदरे
ॐ योनि-क्लृप्तायै नमः—नाभौ
ॐ योनिदायै नमः—मूलाधारे
ॐ योनिहायै नमः—दक्ष-पादे
ॐ योनि-साध्यायै नमः—वाम-पादे

सिन्दूर-कान्तिममिताभरणां त्रिनेत्रां,
विद्याक्ष-सूत्र-मृग - पोत-वरान् दधानाम् ।
पार्श्व-स्थितां भगवतीमपि कांचनाङ्गीं,
ध्यायेत् कराब्ज-धृत-पुस्तक-वर्ण-मालाम् ।।

'ङं नमः—दक्ष-गुल्फे' से प्रारम्भ कर 'ठं नमः जानुनि' तक के क्रम से सारे अङ्गों में मातृका-वर्णों का न्यास करे। इति स्थिति-क्रम-न्यासः ।

संहार-क्रम मातृका-न्यास—उपर्युक्त क्रम से विनियोग में 'संहार-मातृका-न्यास' पद जोड़कर विनियोग करे और ऋष्यादि करांग-न्यासों को करके ध्यान करे—

अक्ष-स्रजं हरिण-पोतमुदग्र-टंकं,
विद्यां करैरविरतां दधतीं त्रिनेत्रां ।
अर्द्धेन्दु-मौलिमरुणामरविन्द-रामां,
वर्णेश्वरीं प्रणमत-स्तन-भार-नम्रां ।।

'क्षं नमः ललाटे', 'अं नमः हृदये' से लेकर मुख तक के अङ्गों में सब वर्णों का न्यास करे। इति संहार-क्रम-न्यासः ।

ॐ योनि-ज्ञानायै नमः—दक्ष-बाहौ
ॐ योनिपायै नमः—वाम - बाहौ
ॐ योनि-पुराद्यायै नमः—सर्वाङ्गे

९—प्राणायाम

मूल-मन्त्र या उसके आदि-बीज का १६ बार जप करता हुआ दक्ष नासा को दायें अँगूठे से बन्द कर वाम नासा से वायु भरे। तब कनिष्ठा, अनामिका और अंगुष्ठ से दोनों नासाओं को बन्द कर ६४ बार जपता हुआ कुम्भक करे। फिर ३२ बार जप करता हुआ वाम नासा से रेचन करे। इसी प्रकार यथा-क्रम मन्त्र जपता हुआ वाम नासा से वायु फिर भर कर दोनों नासाओं से कुम्भक करे और दक्ष से रेचन कर दे। पूर्व - वत् पुनः पूरक, कुम्भक और रेचक करे।

१०—मूल-मन्त्रादि न्यास

विनियोग—अस्य श्रीउग्रतारा-मन्त्रस्य श्रीअक्षोभ्य ऋषिः, बृहती छन्दः, श्रीमदुग्र-तारा देवता, हूँ बीजं, फट् शक्तिः, स्त्रीं कीलकं, धर्मार्थ-काम-मोक्षादि-चतुर्वर्ग-सिद्धये विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास—शिरसि श्रीअक्षोभ्य-ऋषये नमः। मुखे बृहती-छन्दसे नमः। हृदि श्रीमदुग्रतारायै नमः। गुह्ये हूँ बीजाय नमः। पादयोः फट् शक्तये नमः। सर्वाङ्गे स्त्रीं कीलकाय नमः।

पीठ-न्यास—मृग-मुद्रा से हृदय पर हाथ रखकर हृदय-कमल के केसरों में इन मन्त्रों से न्यास करे—'ॐ श्मशानाय नमः, ॐ कल्प-वृक्षाय नमः, ॐ मणि-पीठाय नमः, ॐ नानालङ्कारेभ्यो नमः, ॐ मुनिभ्यो नमः, ॐ देवेभ्यो नमः, ॐ बहु-मांसास्थि-मोदमान-शिवाभ्यो नमः।' चारों दिशाओं में—'ॐ शव-मुण्ड-

चिताङ्गारास्थिभ्यो नमः ।' अष्ट-दलों में पूर्व दिशा के क्रम से— 'ॐ लक्ष्म्यै नमः, ॐ सरस्वत्यै नमः, ॐ रत्यै नमः, ॐ प्रीत्यै नमः ॐ कीर्त्यै नमः, ॐ शान्त्यै नमः, ॐ तुष्ट्यै नमः, ॐ पुष्ट्यै नमः ।' मध्य में—ह्सौः सदाशिव-महाप्रेत-पद्मासनाय नमः ।

तत्व-न्यास—मूलाधार से हृदय-कमल तक—'ॐ आत्म-तत्वाय स्वाहा', हृदय से मुख तक—'ॐ विद्या - तत्वाय स्वाहा', मुख से ब्रह्म-रन्ध्र तक—ॐ शिव-तत्वाय स्वाहा ।

कराङ्ग-न्यास—ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः । ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा । ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट् । ह्रैं अनामिकाभ्यां हुं । ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां फट् । एवं हृदयादिषु ।

वर्ण-न्यास—हृदि अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं नमः ।
दक्ष-हस्ते एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं नमः ।
वाम-हस्ते ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं नमः ।
दक्ष-पादे णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं नमः ।
वाम-पादे मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं नमः । ❁

❁ १ श्रीएकजटा का कराङ्ग-न्यास यह है—

ह्रां एक-जटे अंगुष्ठाभ्यां नमः । ह्रीं तारिण्यै तर्जनीभ्यां स्वाहा । ह्रूं वज्रोदके मध्यमाभ्यां वषट् । ह्रैं उग्र-जटे अनामिकाभ्यां हूं । ह्रौं महा-प्रतिसरे कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । ह्रः पिंगोग्रैक-जटे करतल-करपृष्ठाभ्यां फट् । एवं हृदयादिषु ।

२ श्रीनील-सरस्वती का कराङ्ग-न्यास है—

ह्रां अखिल-वाग्-रूपिण्यै अंगुष्ठाभ्यां नमः । ह्रीं अखण्ड-वाग्-रूपिण्यै तर्जनीभ्यां स्वाहा । ह्रूं ब्रह्म-वाग्-रूपिण्यै मध्यमाभ्यां वषट् । ह्रैं विष्णु-वाग्-रूपिण्यै अनामिकाभ्यां हूं । ह्रौं रुद्र-वाग्-रूपिण्यै कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । ह्रः सर्व - वाग् - रूपिण्यै कर-तल-करपृष्ठाभ्यां फट् । एवं हृदयादिषु ।

विशेष फल चाहनेवाले यहाँ षोढा-न्यास भी करते हैं।

तदनन्तर मूल-मन्त्र से सिर से पैर तक और पैर से सिर तक सात बार व्यापक न्यास करे।

११—पीठ-पूजा

अब बाह्य-पूजा प्रारम्भ करे। पहले पीठ-पूजा करे। यथा—

यन्त्रराज के चारों द्वारों पर—पूर्वे ॐ ह्रीं गां गणेशाय नमः। दक्षिणे ॐ ह्रीं वां वटुकाय नमः। पश्चिमे ॐ ह्रीं क्षां क्षेत्रपालाय नमः। उत्तरे ॐ ह्रीं यां योगिनीभ्यो नमः।

कर्णिका में ॐ श्मशानाय नमः, ॐ कल्प - वृक्षाय नमः, ॐ मणि-पीठाय नमः, ॐ नानालङ्कारेभ्यो नमः, ॐ मुनिभ्यो नमः, ॐ देवेभ्यो नमः, ॐ बहु-मांसास्थि-मोदमान-शिवाभ्यो नमः। आठों दिशाओं में ॐ लक्ष्म्यै नमः, ॐ सरस्वत्यै नमः, ॐ तुष्ट्यै नमः, ॐ पुष्ट्यै नमः। मध्य में ह्सौः सदाशिव-महा-प्रेत-पद्मासनाय नमः।

१२—सामान्यार्घ्य आदि पात्र-स्थापन

सामान्यार्घ्य - पात्र - स्थापन— पीठ-पूजा कर चुकने पर सामान्यार्घ्य-पात्र स्थापित करे। पहले अपनी बाँईं ओर विन्दु-गर्भ त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्रात्मक मण्डल लिखे। 'फट्' मन्त्र से उस मण्डल का प्रोक्षण कर 'ॐ ह्रीं आधार-शक्तये नमः' से उसकी पूजा करे। तब 'फट्' मन्त्र से त्रिपादिका को धोकर 'नमः' का उच्चारण कर उसे उक्त मण्डल पर स्थापित करे। फिर 'फट्' से और 'श्रीमदुग्र-तारायाः अर्घ्य-पात्रासनाय नमः' से उसका पूजन करे। फिर 'फट्' से अर्घ्य-पात्र को धोकर' 'नमः' से उसे त्रिपा-दिका पर रखे और 'श्रीमदुग्र-तारायाः अर्घ्य - पात्राय नमः' से

उसका पूजन करे। मूल-मन्त्र का उच्चारण कर शुद्ध जल से उसे भरे और 'ॐ श्रीमदुग्र-ताराया अर्घ्य-पात्रामृताय नमः' से उसका पूजन करे। तब उस जल में रक्त करवीर, जवा, अपराजिता आदि फूल, विल्व-पत्र, दूर्वा, अक्षत, श्वेत और रक्त-चन्दन छोड़कर—

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि, सरस्वति !
नर्मदे, सिन्धु, कावेरि ! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।

इस मन्त्र से अंकुश-मुद्रा से उसमें तीर्थों का आवाहन करे। फिर 'हूँ' वीज से अवगुण्ठन, 'वं' से धेनु-मुद्रा द्वारा अमृतीकरण, योनि-मुद्रा द्वारा सन्दीपन और षडङ्ग मन्त्रों से सकलीकरण कर उस पर मूल-मन्त्र का दस बार जप करे। तब मत्स्य-मुद्रा द्वारा उसका आच्छादन कर देवी का ध्यान करते हुए पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

प्रोक्षणी-पात्र-स्थापन—सामान्यार्घ्य की दाईं ओर प्रोक्षणी-पात्र उसी प्रकार स्थापित कर उसमें अर्घ्य-पात्र का कुछ जल छोड़े। फिर उसी जल से अपना और पूजा-सामग्री का प्रोक्षण करे। अब पूर्वोक्त सूर्यादि को पाँच अर्घ्य देकर कलश-स्थापन करे।

कलश-स्थापन—इसके लिए पहले अपने वाईं ओर विन्दु-गर्भ षट्कोण, उसके बाहर वृत्त, उसके वाहर त्रिकोण, फिर वृत्त-चतुरस्रात्मक मण्डल लिखे। 'ह्रीं आधार-शक्तये नमः' से मण्डल की पूजा कर 'फट्' से आधार को धोकर 'नमः' से उसे उक्त मण्डल पर स्थापित करे और 'मं वह्नि-मण्डलाय दश-कलात्मने नमः' से उसका पूजन करे तव 'फट्' से कलश को धोकर 'नमः' से उसे उक्त आधार पर स्थापित करे। कलश पर रक्त-चन्दन का लेप कर उसे रक्त-पुष्प और रक्त-माला से

सजावे। तव 'अं अर्क-मण्डलाय द्वादश-कलात्मने नमः' से उसका पूजन कर मूल-मन्त्र का उच्चारण करते हुये उसे कारण से भर दे। फिर 'ॐ सोम-मण्डलाय षोडश-कलात्मने नमः' से उसका पूजन कर मूल-मन्त्र से उसका वीक्षण करे। तव उसे योनि-मुद्रा दिखाकर उसमें देवी को भावना कर पाँच मुद्राओं से प्रणाम करे। यथा—योनि-मुद्रा द्वारा 'ह्रीं नमः' मन्त्र से, हाथ जोड़कर 'क्षां नमः' से, कलश-मुद्रा-द्वारा 'लुं नमः' से, मत्स्य-मुद्रा-द्वारा 'ग्लौं नमः' से, सम्पुटाकार दोनों हाथों से 'ह्रौं नमः' से। तदनन्तर मूल-मन्त्र से प्रोक्षण कर उससे धूप देकर 'ॐ' से गन्ध-पुष्प प्रदान करे। फिर पञ्च-मुद्रायें दिखावे। यथा—'वं' से धेनु-मुद्रा द्वारा अमृतीकरण, मूल से योनि-मुद्रा द्वारा सन्दोपन, मत्स्य-मुद्रा द्वारा आच्छादन, शंख-मुद्रा-द्वारा संरक्षण और खड्ग-मुद्रा का प्रदर्शन करे। तव कलश को पकड़कर निम्न मन्त्र तीन वार पढ़े—

ॐ एकमेव परं-ब्रह्म स्थूल-सूक्ष्म-मयं ध्रुवं।
कचोद्भवां ब्रह्म-हत्यां तेन ते नाशयाम्यहं॥
ॐ सूर्य-मण्डल-सम्भूते ! वरुणालय-सम्भवे !
अमा-वीज-मये देवि ! शुक्र-शापात् विमुच्यतां॥
ॐ वेदानां प्रणवो वीजं ब्रह्मानन्द-मयं यदि।
तेन सत्येन ते देवि ! ब्रह्म-हत्यां व्यपोहतु॥

फिर निम्न मन्त्रों को दस-दस बार जपे—

१ ॐ वां वीं वूं वैं वौं वः ब्रह्म-शाप-विमोचितायै सुधा-देव्यै नमः।

२ ॐ शां शीं शूं शैं शौं शः शुक्र-शाप-विमोचितायै सुधा-देव्यै नमः।

तदनन्तर निम्न मन्त्र को बारह बार जपे—

क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः सुधा कृष्ण-शापं मोचय मोचय अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा ।

फिर निम्न मन्त्रों को तीन बार जपे—

ॐ छ्रां छ्रीं छ्रूं छ्रैं छ्रौं छ्रः छुरिके, भव-शोभिनि ! सर्व-पशु-जन-मनश्चक्षुर्धीन्द्रियाणि स्तम्भय स्तम्भय नाशय नाशय घातय घातय स्वाहा ।

ॐ परम-स्वामिनि, परमाकाश-शून्य-वाहिनि! चन्द्र-सूर्याग्नि-भक्षिणि ! पात्रं विश विश स्वाहा ।

इसके बाद उसमें आनन्द-भैरवी का ध्यान करे । यथा—

सूर्य-कोटि-प्रतीकाशां चन्द्र-कोटि-सुशीतलाम् ।
रक्त-वस्त्र-परीधानां सर्वालङ्कार-भूषिताम् ।।
रत्न-केयूराङ्गदाद्यैः शोभितां सर्व - रूपिणीम् ।
प्रहसन्तीं विशालाक्षीं देव-देवस्य सम्मुखीम् ।।

इस प्रकार ध्यान कर 'स ह क्ष म ल व र यीं आनन्द-भैरव्यै वौषट्' इस मन्त्र से आनन्द-भैरवी का पूजन कर आनन्द-भैरव का ध्यान करे । यथा—

अमृतार्णव-मध्यस्थं पञ्च-वक्त्रं त्रिलोचनम् ।
वृषारूढं नील-कण्ठं सर्वाभरण-भूषितम् ।।
अष्टादश-भुजैर्युक्तं गदा-मुसल-धारिणम् ।
खड्ग-खेटक-पट्टीशं मुद्गरं शूल-दण्डकं ।।
पाशांकुश-शरं चापं मुद्रा-विद्यां च मालिकां ।

मृगं कपालं नागं च विधृतं सर्व-रूपिणं ॥
जटा-मण्डल-मध्यस्थं सुधा-मध्ये विभावयेत् ।

इस प्रकार ध्यानकर 'ह स क्ष म ल व र यूं आनन्द-भैरवाय वषट्' से आनन्द-भैरव का पूजन करे। तब कलश के ऊपर निम्न मन्त्र का दस बार जप करे—

ॐ आनन्देश्वराय विद्महे सुधा-देव्यै धीमहि तन्नोऽर्द्ध-नारीश्वरः प्रचोदयात् ।

फिर उस पर मूल-मन्त्र का और सुधा-वीज 'वं' का इक्कीस-इक्कीस वार जप करे और मूल-मन्त्र से तीन गन्धों को ग्रहण करे। तब कारण के मध्य में अकथादि-रेखात्मक 'ह-ल-क्ष' त्रिकोण-भूषित योनि-मण्डल लिखे। उस मण्डल के मध्य में 'ह्सौः' वीज लिखकर वहाँ शिव-शक्ति के समायोग से अमृतत्व की भावना करे।

यह कारण-शुद्धि हुई।

मांसादि-शोधन—अब मांस, मीन, मुद्रा और कुल-कुसुम को लाकर त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्रात्मक मण्डल के ऊपर स्थापित करे। फिर प्रत्येक का मूल-मन्त्र से वीक्षण, 'फट्' से अर्घ्योदक द्वारा प्रोक्षण, 'हुं' से अवगुण्ठन और 'वं' से धेनु-मुद्रा-द्वारा अमृतीकरण करे।

(क) तदनन्तर मांस पर हाथ रखकर निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ तद्विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते। विष्णोर्यत् परमं पदम्। ॐ कला-मासं महा-मांसं मांसं छागादिकस्य च। योषावर्ज्जं सर्वं-मांसं तारायाः शुद्धि-हेतवे। परमानन्ददश्चैव मांसं परम-कारणं। तारायाश्च प्रियं द्रव्यं सर्वं-दोषं विहाय च। ॐ ह्रौं क्षौं मांसं महा-मांसं शोधय शोधय ॐ ह्रौं क्षौं स्वाहा।

(ख) मीन पर हाथ रखकर निम्न मन्त्र पढ़े—

यदा हिरण्य-रूपं च अण्डजं विष्णु-रूपिणं। महाहि-वलयं देव! मत्स्य-रूपिणमव्ययं। महा-महेति विख्यातं मीनं तारा-प्रियं सदा। ऐं ह्रीं ह्लूं ऐं सौं श्लूं सः सः सः इमं मीनं शोधय शोधय स्वाहा।

(ग) मुद्रा पर हाथ रखकर निम्न मन्त्र पढ़े—

योनि-विद्यां महा-विद्यां कामाख्यां काम-दायिनीं। तत्वशुद्धि-प्रदां देवीं काम-वीजात्मिकां परां। ॐ क्लीं कामेश्वरि महामाये क्लीं कालिकायै नमः। योनि-विद्यां महा-विद्यां चतुर्वर्ग-प्रदायिनीम्। कुलाकुलादि-विज्ञाने तारा नाम-तरोमंते। ॐ क्षौं श्लूं ह्रीं हः, योनि-विद्ये योनि-सिद्ध्यै योनि-कारण-कालिके। कामदा कामिनी विद्या-तत्व-मध्ये महा महा। ॐ सौः बाले बाले त्रिपुर-सुन्दरि, योनि-रूपे! मम सर्व-सिद्धि देहि देहि योनिं मुक्ते कुरु कुरु स्वाहा।

(घ) शक्ति-शोधन के लिए उसके शीर्ष पर हाथ रखकर निम्न मन्त्र पढ़े—

'ॐ ऐं क्लीं त्रिपुरा-देवि! सर्व-शक्तीश्वरत्वं देहि देहि ॐ ॐ' यह मन्त्र दस बार पढ़े। तब उसकी देह में मातृका-न्यास, ऋष्यादि, कराङ्ग-न्यास कर उसके हृदय पर हाथ रखकर मूल-मन्त्र का सौ बार जप करे।

(ङ) कुल-कुसुम-शुद्धि का मन्त्र यह है—

ॐ विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा-रूपाणि विंशतु आसिंचतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते। ॐ गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति। गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्कर-स्रजौ। प्लुं म्लुं स्लुं ग्लुं ब्लुं स्वाहा अमृते अमृतोद्भवे अमृत-वर्षिणि महत्-प्रकाश-युक्ते अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा।

तब प्रत्येक का 'यं, रं, वं' बीजों से क्रमशः शोषण, दाहन,

अमृतीकरण कर पुनः 'हुं' से अवगुण्ठन, 'फट्' से प्रोक्षण, षडङ्गों से सकलीकरण, 'वं' से योनि-मुद्रा द्वारा अमृतीकरण, योनि-मुद्रा से सन्दीपन और ताल-त्रय से दिग्बन्धन करे। इसके बाद उनमें से प्रत्येक पर मूल-मन्त्र का सात-सात बार जप कर उन्हें अलग-अलग पात्रों में रख दे। अब श्रीपात्र स्थापित करे। यथा—

श्रीपात्र-स्थापन—अपने और यन्त्र के मध्य में विन्दु-गर्भ त्रिकोण, वृत्त, षट्-कोण, वृत्त, अष्ट-कोणात्मक मण्डल लिखे। 'फट्' से अर्घ्य-जल-द्वारा उसका प्रोक्षण कर अष्ट-कोणों में श्मशानादि पीठों, षट्-कोणो में षडङ्गों की पूजाकर मूल-मन्त्र से त्रिकोण की पूजा करे और मध्य में 'ह्रीं आधार-शक्ति कमलासनाय नमः' से पूजन करे। तव आधार को 'फट्' से धोकर 'नमः' कहकर उसे उक्त मण्डल पर स्थापित करे। अब आधार पर त्रिकोण, वृत्त, षट्-कोणात्मक मण्डल लिखे। षट्-कोणों में षडङ्गों की पूजाकर मूल-मन्त्र से त्रिकोण का पूजन करे। फिर वृत्त के ऊपर अग्नि की दस कलाओं की पूजा करे। यथा—

'यं धूम्रार्चिषे नमः। रं उष्मायै नमः। लं ज्वलिन्यै नमः। वं ज्वालिन्यै नमः। शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः। षं सुश्रियै नमः। सं सुरूपायै नमः।' अन्त में 'मं वह्नि-मण्डलाय दश-कलात्मने नमः' से मण्डल की पूजा करे। इसके बाद कपालादि पात्र को 'फट्' से धोकर 'नमः' कहकर उक्त आधार पर स्थापित करे। पात्र में त्रिकोण, वृत्त, षट्-कोणात्मक मण्डल लिखे। षट्-कोण में षडङ्गों की पूजाकर मूल-मन्त्र से त्रिकोण का पूजन करे। फिर वृत्त के ऊपर सूर्य की बारह कलाओं की पूजा करे। यथा—

'कं भं तपिन्यै नमः। खं बं तापिन्यै नमः। गं फं धूम्रायै नमः। घं पं मरीच्यै नमः। ङं नं ज्वालिन्यै नमः। चं धं रुच्यै

नमः। छं दं सुषुम्नायै नमः। जं थं भोगदायै नमः। झं तं विश्वायै नमः। ञं णं बोधिन्यै नमः। टं ढं धारिण्यै नमः। ठं डं क्षमायै नमः।' अन्त में 'अं अर्क-मण्डलाय द्वादश-कलात्मने नमः' से मण्डल की पूजा करे। अर्घ्य-पात्र-पूजन निम्न मन्त्र से करे—

ह्रां ह्रीं ह्रूं नीला-कपालाय नमः। ह्रीं स्त्रीं हूं स्वर्ग-कपालाय सर्वाधाराय सर्वाय सर्वोद्भवाय सर्व-शुद्धि-मायाय सर्वासुर-रुधिरारुणाय शुभ्राय सुरा-भाजनाय देवी-कपालाय नमः।

इसके बाद क्षकार से लेकर अकार तक विलोम मातृका-वर्णों और मूल-मन्त्र का उच्चारण करते हुए अपने बाँई ओर रखे हुये घट के कारण से श्री-पात्र का तीन भाग भरकर शेष एक भाग को अर्घ्य-जल से पूर्ण कर दे। अब इस द्रव्य के मध्य में त्रिकोण-वृत्त-षट्-कोणात्मक मण्डल की रचना करे। पूर्व-वत् षट्-कोणों की पूजा कर वृत्त के ऊपर सोम की सोलह कलाओं का पूजन करे। यथा—

अं अमृतायै नमः। आं मानदायै नमः। इं पूषायै नमः। ईं तुष्ट्यै नमः। उं पुष्ट्यै नमः। ऊं रत्यै नमः। ऋं धृत्यै नमः। ॠं शशिन्यै नमः। लृं चन्द्रिकायै नमः। लॄं कान्त्यै नमः। एं ज्योत्स्नायै नमः। ऐं श्रियै नमः। ओं प्रीत्यै नमः। औं अङ्गदायै नमः। अं पूर्णायै नमः। अः पूर्णामृतायै नमः।

अन्त में 'उं सोम-मण्डलाय षोडश-कलात्मने नमः' से मण्डल का पूजन करे। अब पात्र में श्वेत व रक्त-चन्दन, रक्त-पुष्प, बिल्व-पत्र, दूर्वा, अक्षत छोड़कर पूर्व-वत् कारण में आदि (१६), कादि (१६), थादि (१६) त्रिरेखात्मक, 'ह ल क्ष' इन तीन विन्दुओं से भूषित एवं 'हसौः'-गर्भ त्रिकोण-मण्डल की रचना करे। 'हसौः मण्डलाय नमः' से इस मण्डल की पूजा कर 'क्रों' मन्त्र से अंकुश-मुद्रा द्वारा चन्द्र-मण्डल से उसमें तीर्थों का आवा-

हन करे। तब उसमें शुद्धि, मीन, मुद्रा, कुल-कुसुम छोड़कर आनन्द-भैरव और आनन्द-भैरवी का ध्यान करे। उनका पूजन कर श्रीपात्र को पकड़ कर निम्न मन्त्र पढ़े—

ऐं क्लीं सौः ब्रह्माण्ड-रस-सम्भूतमशेष-रस-सम्भवं। आपूरतं महा-पात्रे पीयूष-रसमावह। ऐं अखण्डैक-रसानन्द-करे पर-सुधात्मनि स्वच्छन्द-स्फुरणामत्र निधेहि कुल-रूपिणि! क्लीं अकुलस्थामृताकारे शुद्ध-ज्ञान-कलेवरे अमृतत्वं निधेह्यस्मिन् वस्तूनि क्लिन्न-रूपिणि! सौः तद्रूपेणैकरस्यं च कृत्वास्यैक-स्वरूपिणि! भूत्वा कुलामृताकारं मयि विस्फुरणं कुरु। ॐअहन्ता पात्र-भरितामिदन्ता परमामृतं परा-हन्ता-मये वह्नौ होम-स्वीकार-लक्षणम्। ऐं वद वद वाग्वादिनि क्लीं क्लिन्ने क्लेदिनि सौः महा-मोक्षं कुरु कुरु स्हौं ह्सौं ग्लूं न्लुं स्लुं प्लुं म्लुं अमृते अमृतोद्भवे अमृत-वर्षिणि महत्-प्रकाश-युक्ते अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा।

अब उसमें पञ्च-रत्नों का पूजन करे। यथा—ग्लुं गगन-रत्नेभ्यो नमः। स्लुं स्वर्ग - रत्नेभ्यो नमः। न्लूं! नाग-रत्नेभ्यो नमः। प्लुं पाताल-रत्नेभ्यो नमः। म्लुं मर्त्य-रत्नेभ्यो नमः।

पुनः आनन्द-भैरव और आनन्द-भैरवी का ध्यान कर सुधा देवी का ध्यान करे। यथा—

भावयेच्च सुधां देवीममृतानन्द-नन्दिनीम्।
सदा षोडश-वर्षीयां प्रसन्नास्यां त्रिलोचनाम्॥
रक्ताभरण-शोभाढ्यां नानालङ्कार-भूषिताम्।
काम-देवेन चोन्मत्ता कन्यका-रूप-धारिणीम्॥
सदा-शिव-मयीं देवीं रत्युल्लास-हृदान्विताम्।
महा-मोक्ष-प्रदां देवीं भावयेत् साधकाग्रणी॥

इस प्रकार ध्यान कर देवी की पूजा करे। तब देवी का

उसमें आवाहन कर 'हुं' से अवगुण्ठन, 'वं' से धेनुमुद्रा-द्वारा अमृतीकरण, योनि-मुद्रा से सन्दोपन, शङ्ख-मुद्रा से संरक्षण, षडङ्गों से सकलीकरण और मत्स्य-मुद्रा से आच्छादन करे। फिर उस पर मूल-मन्त्र का दस बार जप करे और अर्घ्य-पात्र को देवी-स्वरूप मानकर गन्ध, पुष्प धूप, दीप से उसकी पूजा करे। इसके बाद हाथ जोड़कर—

ॐ नमस्तस्यै सुधा-देव्यै तारका सिद्धि-नित्यशः दात्र्यै।
पुण्य - प्रदायै च भुक्त्यै मुक्त्यै महेश्वरीम् ॥

यह पढ़े और शिव-शक्ति के समागम की भावना करे।

सर्व-पथिक-देवता बलि—अब अर्घ्य-पात्र का कुछ जल प्रोक्षणी-पात्र में डालकर उस जल को अपने ऊपर और पूजा-सामग्री के ऊपर छिड़के। तब सर्व-पथिक देवताओं को बलि प्रदान करे। इसके लिए भूमि पर त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्रात्मक मण्डल लिखकर दूसरे पात्र में शुद्धयादि-सहित बलि उस मण्डल पर रखे और यह मन्त्र पढ़े—

'ॐ सर्व-पथिक-देवता मम कल्याणं कुर्वन्तु ह्रौं क्षौं स्वाहा।'

फिर वृहत् पात्र के ऊपर तीन बार उसे घुमाकर श्रीपात्र के ऊपर घुमावे। तदनन्तर उसे बिल्व-मूल, चतुष्पथ, नदी-तट, तालाब या वेश्यागार में डाल दे।

गुर्वादि-पात्र-स्थापन—इसके बाद घट और श्रीपात्र के मध्य में गुर्वादि अष्ट-पात्र, षट्-पात्र, चतुः-पात्र या दो पात्र सामान्यार्घ्य-स्थापन में कहे गए क्रम के अनुसार यथा-सामर्थ्य स्थापित करे। तब तर्पण करे। यथा—

१३—तर्पण

बाँयें हाथ में तत्व-मुद्रा से शुद्धि-सहित श्री-पात्र का कारण लेकर उससे मूर्ध्नि में 'ह-स-क्ष-म-ल-र - यूं आनन्द-भैरवाय

वषट् एतत्स-शुद्धि-आसवं तर्पयामि नमः' इस मन्त्र से तीन बार तर्पण करे। इसी प्रकार 'सहक्षमलवरयीं आनन्द-भैरव्यै वौषट् आनन्द-भैरवीं तर्पयामि स्वाहा' से तीन बार तर्पण करे। फिर गुरु-पात्र का अमृत लेकर पादुका का उच्चारण कर 'श्री अमुकानन्द-नाथ श्रीअमुकी देव्यम्बा श्रीपादुकां तर्पयामि नमः' या 'ऐं श्रींअमुकानन्द-नाथ-गुरुं तर्पयामि' से तीन या एक बार तर्पण करे। तब 'ॐ परम-गुरुं तर्पयामि नमः', 'ॐ परात्पर-गुरुं तर्पयामि नमः', 'ॐ परमेष्ठि-गुरुं तर्पयामि नमः' से तीन या एक बार तर्पण कर कैवल्य-तन्त्र के मतानुसार देवताओं, ऋषियों और पितरों का एक-एक बार तर्पण करे। तदनन्तर श्रीपात्र का अमृत लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण कर 'श्रीमदमुकी देवीं तर्पयामि स्वाहा' से सात, पाँच या तीन बार इष्ट-देवी का तर्पण करे। फिर उस मन्त्र के ऋषि, उस देवी के शिव का भोग-पात्र या वीर-पात्र के अमृत से तीन या एक-एक बार तर्पण करे। तब शक्ति-पात्र का अमृत लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण कर 'सायुधां स-वाहनां सपरिवारां श्रीमदमुक-देवीं तर्पयामि स्वाहा' से इष्ट-देवी का तीन या एक बार तर्पण करे।

इस प्रकार तर्पण कर चुकने पर तत्व-शुद्धि करे। पहले हाथ जोड़कर निम्न सात मन्त्रों से अघमर्षण करे—

१४—तत्त्व-शुद्धि

ॐ प्राणापान-समानोदान-व्याना मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा। ॐ पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशानि मे शुद्ध्यन्तामित्यादि। ॐ प्रकृत्यहंकार-बुद्धि-मनः-श्रोत्राणि मे शुद्ध्यन्तामित्यादि। ॐ त्वक्-चक्षुर्जिह्वा-घ्राण-वचांसि मे शुद्ध्यन्तामित्यादि। ॐ पाणि-पाद-पायूपस्थ-शब्दा मे शुद्ध्यन्ता-

मित्यादि। ॐ स्पर्श-रूप-रस-गन्धाकाशानि मे शुद्धयन्ता-मित्यादि। ॐ वायु-तेजः-सलिल-भूम्यात्मानो मे शुद्धयन्ता-मित्यादि।

अब कारण से कर-तल का मार्जन कर दाहिनी हथेली में अधोमुख त्रिकोण लिखे। त्रिकोण के तीनों कोनों और मध्य में शुद्धि-खण्ड रखकर 'मूलं ह्रीं श्रीं आत्म-तत्त्वेन स्थूल-देहं शोधयामि स्वाहा' से अधः-स्थित शुद्धि-खण्ड, 'मूलं ह्रीं श्रीं विद्या-तत्त्वेन सूक्ष्म-देहं शोधयामि स्वाहा' से दाईं ओर स्थित शुद्धि-खण्ड, 'मूलं ह्रीं श्रीं शिव-तत्त्वेन पर-देहं शोधयामि स्वाहा' से बाँईं ओर स्थित शुद्धि-खण्ड और 'मूलं ह्रीं श्रीं सर्व-तत्त्वेन तनुत्रयाश्रयं जीवं शोधयामि स्वाहा' से मध्य-स्थित शुद्धि-खण्ड उठाकर ग्रहण कर ले।

अथवा

अपनी दाहिनी हथेली पर त्रिकोण लिखकर शुद्धि-युक्त आसव तीनों कोणों और मध्य में स्थापित करे। फिर लज्जा-वीज का दस बार जप कर 'ॐ ह्रीं ह्रौं ह्रीं ह्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः जीव-तत्त्वं अधः-कोणस्थ-तत्त्वेन शोधयामि स्वाहा' से अधोकोण-स्थित शुद्धि-खण्ड बाँयें हाथ से उठाकर ग्रहण करे। फिर बाँयें कोण में स्थित शुद्धि-खण्ड को लेकर 'ॐ ह्रीं ह्रौं ह्रीं ह्रीं कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं वाम-कोणस्थ परम-तत्त्वेन परम-तत्त्वं शोधयामि स्वाहा' से ग्रहण करे। इसी प्रकार दायें कोण में स्थित शुद्धि-खण्ड को लेकर 'ॐ ह्रीं ह्रौं ह्रीं ह्रीं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं दक्ष-कोणस्थ-तत्त्वेन शक्ति-तत्त्वं शोधयामि स्वाहा' से ग्रहण कर ले। तब मध्य-खण्ड को लेकर 'ॐ ह्रीं ह्रौं ह्रीं ह्रीं हं लं क्षं मध्यस्थ-माया-तत्त्वेन तत्त्वं शोधयामि स्वाहा' से ग्रहण कर ले।

१५—विन्दु-स्वीकार

इसके बाद तत्व-मुद्रा से शुद्धि-सहित भोग-पात्र से कारण लेकर निम्न मन्त्रों से तीन बार विन्दु-स्वीकार करे—मूलं ॐ आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माऽहमस्मि अहमस्मि ब्रह्माऽहमस्मि योऽहमस्मि सोऽहमस्मि ब्रह्माऽहमस्मि अहमेव हि मां जुहोमि स्वाहा।

मूलं ॐ त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्माऽसि त्वामेव प्रत्यक्षं वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि त्वं मामवतु त्वद्वक्तारमवतु अवतु मामवतु वक्तारं स्वाहा।

मूलं ॐ यश्छन्दसामृषभो विश्व-रूपश्छन्देभ्योऽध्यमृतात् सम्बभूव यमेन्द्रो मेधया स्पृणोतु अमृतस्य देव-धारणो भूयासं। शरीरं मे विचर्षणं, जिह्वा मे मधु-मत्तमा, कर्णाभ्यां भूरि विश्रुवं, ब्रह्मणः कोषोऽसि मेधयाऽपिहितः, श्रुतं मे गोपाय स्वाहा।

१६—वटुकादि पञ्च-बलियाँ

अब वटुकादि-बलियाँ प्रदान करे। इसके लिए घट की पूर्व दिशा में त्रिकोण - वृत्त-चतुरस्रात्मक चार मण्डल लिखे। 'ॐ मण्डलाय नमः' से मण्डल की पूजा कर बलि - पात्र से कारण लेकर मांस, मोन-सहित बलि वहाँ उपस्थित करे और पूर्व में 'ॐ वां वटुकाय नमः' से वटुक को पूजा कर बलि-पात्र के अमृत से बाँयें अँगूठे और अनामिका से निम्न मन्त्र पढ़कर बलि प्रदान करे—

एहि एहि देवी-पुत्र, वटुकनाथ, कपिल-जटा-भार-भास्वर, त्रिनेत्र, ज्वाला-मुख! सर्वान् - विघ्नान्नाशय नाशय, सर्वोपचार-सहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा एष बलिर्वां वटुकाय नमः।

इसी प्रकार दक्षिण में 'यां योगिनीभ्यो नमः' से योगिनी-पूजन कर दाहने अँगूठे और अनामिका से बलि प्रदान करे—

ऊर्ध्वे ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगन - तले भूतले निष्कले वा। पाताले वा वने वा सलिल - पवनयोर्यत्र कुत्र स्थिता वा। क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृत-पदा धूप-दीपादिकेन प्रीता देव्यः सदा नः शुभ-बलि-विधिना पान्तु वीरेन्द्र-वंद्याः यां योगिनीभ्यो स्वाहा सर्व-योगिनीभ्यो हुं फट् स्वाहा एष बलिर्योगिनीभ्यो नमः।

पश्चिम में 'क्षां क्षेत्रपालाय नमः' से क्षेत्रपाल की पूजा कर तर्जनी-शरली बाईं मूठ से बलि दे——

त्रिशूलं डमरुं चैव कपालं शङ्खमेव च दधानं कृष्ण-वर्णं तं भजेऽहं क्षेत्रपालक क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः स्थान-क्षेत्रपाल ! धूप-दीपादि-सहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा एष बलिः क्षेत्रपालाय नमः।

उत्तर में 'गां गणेशाय नमः' से पूजन कर दण्डाकारा मध्य-मांगुली को अंगुष्ठ-युक्त करके बलि प्रदान करे—

गां गीं गूं गैं गौं गः गणपते ! वर वरद सर्व-जनं मे वशमानय बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा एष बलिर्गं गणेशाय नमः।

इसके बाद अपने बाँईं ओर चतुरस्र मण्डल लिखकर—'ॐ व्यापक-मण्डलाय नमः' से उसकी पूजा करे। फिर पूर्व-वत् उस पर बलि प्रस्तुत कर 'ह्रीं श्रीं सर्व-विघ्न-कृद्भ्यः सर्व-भूतेभ्यो नमः' से सर्व - भूतों का पूजन करे। तब 'ह्रीं श्रीं सर्व-विघ्न-कृद्भ्यो सर्व-भूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा एष बलिः सर्व-भूतेभ्यो नमः' से बलि प्रदान करे।

पञ्च-बलि देने में साधक अशक्त हो, तो केवल सर्व-भूतों को ही एक बलि दे सकता है। पञ्च-बलियाँ देने के बाद मूल-मन्त्र से व्यापक न्यास करे।

१७—यन्त्रराज-यजन

आवाहन—अब देवता का यजन करने के लिये उसका आवाहन करे। पहले उसका हृदय में ध्यान करे। यथा—

प्रत्यालीढ-पदार्पितांघ्रि-शव-हृत् घोराट्टहासा परा।
खड्गेन्दीवर-कर्तृ-खर्पर-भुजा हूँकार-वीजोद्भवा॥
खर्वा नील-विशाल-पिङ्गल-जटा-जूटैक-नागैर्युता।
जाड्यं न्यस्य कपालके त्रिजगतां हन्त्युग्रतारा स्वयम्॥

ध्यान कर चुकने पर मूलाधारस्थ इष्ट-देवता-स्वरूपा कुण्डलिनी को षट्-चक्र-भेद-क्रम से सहस्रार में ले आवे और वहाँ उसका परम शिव से संयोग करावे। क्षण मात्र के रमण से उद्भूत अमृत से आप्लावित होने से आनन्द-मग्न उस ब्रह्म-मयी को अपने हृदय में ले आवे। तब नासा-पुट से उसे पुष्पांजलि में लाकर यन्त्र पर स्थापित करे। फिर मूल-मन्त्र से मूर्ति की कल्पना कर हाथ जोड़कर प्रार्थना करे। यथा—

देवेशि! भक्ति-सुलभे! परिवार-समन्विते!
यावत् त्वां पूजयिष्यामि तावत् त्वं सुस्थिरा भव॥

अब आवाहनादि क्रियायें करे। यथा—

आवाहन ऊर्ध्वांजलियों से-श्रीमदुग्रतारे देवि इहागच्छ इहागच्छ,
स्थापन अधोमुखाञ्जलियों से— " इह तिष्ठ इह तिष्ठ,
सन्निधापन गर्भांगुष्ठ-मुष्टियों से—" इह सन्निधेहि इह सन्निरुध्यस्व, सम्मुखीकरण हाथ जोड़कर—श्रीमदु॰ इह सम्मुखी भव,
अधिष्ठान हाथ घुमाकर—श्रीमदु॰ अत्राधिष्ठानं कुरु मम पूजां गृहाण।

प्राण-प्रतिष्ठा—तब देवी के अंगों में षडंगों का न्यास कर कवच से अवगुंठन और 'वं' से धेनु मुद्रा-द्वारा अमृतीकरण करे। अब संयुक्त अनामांगुष्ठ के अग्र-भाग से प्राण-प्रतिष्ठा करे—

आं ह्रीं क्रों स्वाहा हंसः श्रीमदुग्रताराया: जीव इह स्थितः। आं ह्रीं क्रों स्वाहा हंसः श्रीमदुग्रताराया: सर्वेन्द्रियाणि इह

स्थितानि। आं ह्रीं क्रों स्वाहा सः श्रीमदुग्रताराया: वाङ्-मनो-नयन-श्रोत्र-घ्राण-प्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

षोडशोपचार-पूजन—इसके वाद मूल-मन्त्र जपकर योनि, महा-योनि, लेलिहा, शङ्ख, खड्ग, मृग और गालिनी मुद्रायें दिखावे। फिर 'मूलं श्रीमदुग्रतारे वज्र - पुष्पं प्रतीच्छ हुं फट् स्वाहा' से पुष्पाञ्जलि देकर षोडशोपचार-पूजन आरम्भ करे। यथा—

(१) आसन—मूलं श्रीमदुग्रतारे वज्र-पुष्पं प्रतीच्छ हुँ फट् स्वाहा इदं स्वर्णाद्यासनं श्रीमदुग्रतारायै नमः।

(२) स्वागत—मूलं श्रीमदुग्रतारें वज्र-पुष्पं प्रतीच्छ हुँ फट् स्वाहा श्रीमदुग्रतारे स्वागतं ते सुस्वागतं।

(३) पाद्य—मूलं श्रीमदुग्रतारे स्वाहा एतत् पाद्यं श्रीमदुग्रतारायै नमः (मूठी बाँधकर अँगूठा-तर्जनी फैला दे, इस मुद्रा से चरणों में जल प्रदान करे।

(४) अर्घ्य—मूलं श्रीमदुग्रतारे स्वाहा इदमर्घ्यं श्रीमदुग्रतारायै स्वाहा (दूर्वाक्षत, रक्त-पुष्प, श्वेत-रक्त-चन्दन, विल्व-पत्र और जल शिर पर प्रदान करे)।

(५) आचमनीय—मूलं···स्वाहा इदमाचमनीयं श्रीमदुग्रतारायै स्वधा (सुगन्धित जल मुख में प्रदान करे)।

(६) स्नान—मूलं··स्वाहा एतत्स्नानीयोदकं श्रीमदुग्रतारायै नमः (सुगन्धित जल सर्वाङ्ग पर प्रदान करे)।

आचमनीय पूर्व-वत्

(७) वस्त्र—मूलं····स्वाहा एतद्वस्त्रं श्रीमदुग्रतारायै नमः।

आचमनीय पूर्व-वत्

(८) आभरण—मूलं····स्वाहा एतत्स्वर्णाद्याभरणं श्रीमदुग्रतारायै नमः।

(९) गन्ध---मूलं ""स्वाहा एष गन्धः श्रीमदुग्रताराये नमः।

(१०) अनुलेपन—मूलं ""स्वाहा इदं रक्तानुलेपनं श्रीमदुग्र-तारायै नमः। (मध्यमा, अनामा, अंगुष्ठ से सर्वाङ्ग में)।

(११) पुष्प---मूलं ""स्वाहा एतत्पुष्पं श्रीमदुग्र० वौषट् (श्वेत, रक्त, कृष्णादि नाना सुगन्धित पुष्पाञ्जलि शिर, हृदय, गुह्य, चरण और सर्वाङ्ग में क्रमशः पाँच वार प्रदान करे)।

विल्व-पत्र---मूलं ""स्वाहा एतद्बिल्व-पत्रं श्रीमदुग्र० नमः।

(१२) संस्कृत धूप---" एष धूपं " " "

'ॐजय-ध्वनि मन्त्र-मातः स्वाहा घण्टायै नमः' से गन्ध-पुष्प द्वारा घण्टे का पूजन कर बायें हाथ से उसे वजाते हुए धूप को दाईं ओर से घुमाते हुए नासिका-पर्यन्त तोन वार धूप प्रदान करे।

कर्पूर-युक्तादि - वर्ति - सहित घृतादि दीप को जलाकर उसका संस्कार करे और तव उसे प्रदान करे। यथा—

(१३) दीप---मूलं ""स्वाहा एष दीपं श्रीमदुग्र-तारायै नमः।

पूर्व-वत् घण्टा वजाते हुए उच्च दृष्टि-पर्यन्त तोन या सात वार दीपक दिखावे।

अब वाँयें हाथ में पान-पात्र और दाहने हाथ में शुद्धयादिक लेकर हाथ जोड़कर कहे—

ॐ परमं वारुणी-कल्पं कोटि-कल्पान्त-कारिणि गृहाण शुद्धि-सहितं ; देहि मे मोक्षमव्ययं शुद्धयासव-रसः स्वादु-परमानन्द-निर्भरे, अपारे भव-संसारे त्राहि मां परमेश्वरि !

फिर आधार पर पात्र को स्थापित कर वाँयें हाथ की तत्व-मुद्रा से उसे पकड़कर निम्न पूजा-मन्त्र पढ़ते हुए दायें हाथ से अर्घ्योदक प्रदान करे—

मूलं⋯स्वाहा एतत्स-शुद्ध्यासवं श्रीमदुग्र-तारायै निवेदयामि नमः ।

(१४) नैवेद्य—अपने सम्मुख त्रिकोण - वृत्त - चतुरस्रात्मक मण्डल के ऊपर साधार नैवेद्य स्थापित कर 'ॐ नैवेद्याय नमः' से उसका गन्ध-पुष्प से पूजन करे। फिर 'फट्' से उसका प्रोक्षण कर 'ॐ ब्रह्मार्पणं ब्रह्म - हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतं ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्म-कर्म-समाधिना ॐ अन्न ब्रह्म-रसो विष्णुर्भोक्ता देवो महेश्वरः आहारः सर्व-भूतानामेतदन्नममृताय च' से उसे अभिमन्त्रित करे। तब 'हुं' से अवगुण्ठन, 'वं' से धेनु-मुद्रा-द्वारा अमृतीकरण, योनि-मुद्रा से सन्दीपन, षडङ्गों से सकलीकरण और मत्स्य-मुद्रा से आच्छादन कर उस पर दस वार मूल-मन्त्र का जप करे। इसके बाद वाँयें हाथ की तत्व-मुद्रा से उसे पकड़कर दायें हाथ में अर्घ्योदक लेकर निम्न पूजा-मन्त्र से नैवेद्य प्रदान करे—

मूल⋯स्वाहा एतत्सोपकरण - नैवेद्यं श्रीमदुग्रतारायै निवेदयामि नमः ।

आचमन—ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ।

जल—मूलं⋯स्वाहा एतत्पानार्थोदकं श्रीमदुग्रतारायै निवेदयामि नमः ।

अब प्राणादि मुद्रायें दिखावे । यथा—ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा ।

'ॐ निवेदयामि भगवत्यै जुषाणेदं हविर्मम' से व्यास-मुद्रा दिखावे ।

(१५) पुनराचमनीय—मूलं⋯स्वाहा एतत्पुनराचमनीयं श्रीमदुग्रतारायै स्वाहा ।

ताम्बूल को पूर्ववत् अभिमन्त्रित कर निवेदित करे। यथा—

(१६) ताम्बूल—मूलं…स्वाहा एतत्ताम्बूलं श्रीमदुग्र-तारायै निवेदयामि नमः ।⚘

तदनन्तर श्रीपात्र के अमृत से देवी को तीन बार तर्पण करावे और प्रणाम करे ।

१८—आवरण-पूजन

आवरण-पूजन—अब देवी के शिर, हृदय, गुह्य, चरण और सर्वाङ्ग में क्रमशः पाँच पुष्पाञ्जलियाँ अर्पित कर योनि-मुद्रा दिखाते हुए हाथ जोड़कर पूजन के लिये आज्ञा माँगे—

श्रीमदुग्र-तारे आज्ञापय परिवारांस्ते पूजयामि ।

(१) **प्रथम आवरण**—आज्ञा लेकर तुषार-स्फटिक-श्याम-नील-कृष्णारुण-वर्णवाली वरदाभय-धारिणी षडङ्ग-देवताओं का ध्यान कर केशरों में अग्नि आदि कोणों में 'ह्रां हृदयाय नमः' इत्यादि मन्त्रों से षडङ्गों का पूजन करे। इसके बाद देवी के मस्तक पर अक्षोभ्य-भैरव की पूजा करे। यथा—

मन्त्र—**ॐ स्त्रीं आं अक्षोभ्य स्वाहा ।**

विनियोग—**अस्य श्रीअक्षोभ्य-मन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-महेश्वर-ऋषयः, विराट् छन्दः, अक्षोभ्य-भैरवः देवता, स्त्रीं बीजं, स्वाहा शक्ति, ॐ कीलकं, धर्मार्थ-काम-मोक्ष-चतुर्वर्ग-सिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।**

⚘ षोडशोपचार-पूजा में असमर्थ हो, तो दशोपचारों या पञ्चोपचारों से पूजन करे। पञ्चोपचार ये हैं—गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य। इनके आदि में पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, मधुपर्क जोड़ लेने से दशोपचार होते हैं।

शिरसि आदि क्रम से ऋष्यादि-न्यास कर प्रणव से कराङ्ग-न्यास करे और तब ध्यान करे—

सहस्रादित्य-सङ्काशं नाग-रूप-धरं शुभम् ।
विद्युत्कोटि-समं वक्त्रं वह्निभं रक्त-लोचनम् ।।
सार्द्ध-त्रिवलयोपेतं जटा-कोटिर-संस्थितम् ।
महा-लावण्य-संयुक्तं सुरासुर-नमस्कृतम् ।।

ध्यान कर चुकने पर 'मूलं अक्षोभ्य वज्र-पुष्पं प्रतीच्छ हूँ फट् स्वाहा एतत्पाद्यं अक्षोभ्य-भैरवाय नमः' इत्यादि मन्त्रों से पूर्व-वत् दशोपचारों, षोडशोपचारों या पञ्चोपचारों से उनका पूजन कर वीर-पात्र के अमृत से उनका तीन बार तर्पण करे। फिर मद्य-मांसादि से बलि देकर यथा-शक्ति उक्त मन्त्र का जप करे। जप-फल को समर्पित कर अक्षोभ्य भैरव को प्रणाम करे।

तदनन्तर निम्न मन्त्रों से पूजन-तर्पण करे—

देवी के दायें हाथ के ऊपर खं खड्गाय नमः।
" " नीचे कं कर्तृकायै "
" बाँयें " ऊपर इं इन्दीवराय "
" " नीचे सद्यः-कृत्त-शिरः-सहितकं कपाल-चषकाय नमः।

तब त्रिकोण के बीच में वायव्य से ईशान-पर्यंत गुरु-पंक्ति का पूजन-तर्पण करे। यथा—

दिव्यौघ

ऐं श्रीगुरु-अमुकानन्द-नाथ श्रीअमुकी-देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।

ऐं श्रीपरमगुरु० श्रीपादुकां पूजयामि० स्वाहा।

ऐं श्रीपरापर-गुरु० श्रीपादुकां पूजयामि० स्वाहा।

ऐं श्रीपरमेष्ठि-गुरु० " " "

ऊर्ध्व-केशानन्द - नाथ वज्र-पुष्पं प्रतीच्छ हूँ फट् स्वाहा ऊर्ध्व-केशानन्द-नाथाय नमः श्रीपादुकां पूज०।

व्योमकेशानन्द - नाथ वज्र - पुष्पं प्रतीच्छ हूँ फट् स्वाहा व्योमकेशानन्द-नाथाय नमः श्रीपादुकां पूज०।

नीलकण्ठानन्द-नाथ वज्र-पुष्पं प्रतीच्छ हूं फट् स्वाहा नील-कण्ठानन्द-नाथाय नमः श्रीपादुकां पूज०।

वृषभ - ध्वजानन्द-नाथ वज्र-पुष्पं प्रतीच्छ हूँ फट् स्वाहा वृषभ-ध्वजानन्द-नाथाय नमः श्रीपादुकां पूज०।

सिद्धौघ

वशिष्ठानन्द - नाथाय वज्र-पुष्पं प्रतीच्छ हूँ फट् स्वाहा वशिष्ठानन्द-नाथाय नमः श्रीपादुकां पूज०।

कूर्मनाथानन्द - नाथ वज्र - पुष्पं प्रतीच्छ हूँ फट् स्वाहा कूर्मनाथानन्द-नाथाय नमः श्रीपादुकां पूज०।

मीन - नाथानन्द-नाथ वज्र - पुष्पं प्रतीच्छ हूँ फट् स्वाहा मीन-नाथानन्द-नाथाय नमः श्रीपादुकां पूज०।

महेश्वरानन्द - नाथ वज्र - पुष्पं प्रतीच्छ हूँ फट् स्वाहा महेश्वरानन्द-नाथाय नमः श्रीपादुकां पूज०।

हरि-नाथानन्द-नाथ वज्र-पुष्पं प्रतीच्छ हूँ फट् स्वाहा हरि-नाथानन्द-नाथाय नमः श्रीपादुकां पूज०।

मानवौघ

तारावत्यम्बा वज्र-पुष्पं प्रतीच्छ हूँ फट् स्वाहा श्रीपादुकां पूज०। भानुमत्यम्बा०, जयाम्बा०, विद्याम्बा० महोदयम्बा०।

सुखानन्द-नाथ वज्र० स्वाहा सुखानन्द-नाथाय नमः श्री-पादु० । पारिजातानन्द-नाथ०, कुलेश्वरानन्द०, विरूपाक्षानन्द-नाथ०, हेरम्बानन्द-नाथ ।

वह्नि-मण्डल के कोण - त्रय में—१ कामेश्वरीं, २ दिग्वासिनीं, ३ चण्ड-नायिका । अधोमुख-त्रिकोण में—१ गायत्रीं च ब्रह्मां, २ सावित्रीं च विष्णुं ३ सरस्वतीं च महेश्वरं (इन्द्र-कोणे, रक्ष-कोणे वायु-कोणे इति-क्रमः) । ध्यान—

१—इन्द्र-कोणे लसद्-दण्डं कुण्डिकाख्य - गुणाभयां ।
गायत्रीं पूजयेन्मन्त्री ब्रह्माणामपि तादृशं ।।
२—रक्ष-कोणे चक्र-शङ्ख-गदा - पङ्कज - धारिणीं ।
सावित्रीं पीत-वसनां यजेद् विष्णुं च तादृशं ।।
३—वायु-कोणे च पर्श्वक्ष-मालाऽभय - वरान्वितां ।
यजेत् सरस्वतीं देवीं महा - देवं च तादृशं ।।

उपर्युक्त क्रम षट्-कोण-पक्ष का है अर्थात् जिस यन्त्र में षट्-कोण-गर्भित है। जिस यन्त्र में केवल त्रिकोण है, षट्-कोण नहीं है, उसमें केवल ब्राह्मी, वैष्णवी तथा माहेश्वरी का पूजन होगा। दोनों क्रमों में पूजन वामावर्त्त-क्रम से है।

अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागत-वत्सले !
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ।।

पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ्य-विन्दु से अर्पित करे और यह कहे—'सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तु'।

(२) द्वितीय आवरण—तदनन्तर पूर्वादि अष्ट - दलों में निम्न मन्त्रों से पूजन करे—

महा-कालि ! वज्र-पुष्पं प्रतीच्छ हूं फट् स्वाहा महा-काल्यै नमः श्रीपादुकां पूज० ।

रुद्राणि वज्र० स्वाहा रुद्राण्यै नमः श्रीपादु० ।
उग्रे " उग्रायै " "
भीमे " भीमायै " "
घोरे " घोरायै " "
भ्रामरि " भ्रामर्यै " "
महा-रात्रि " महा-रात्र्यै " "
भैरवि " भैरव्यै " "

पूर्व-वत् द्वितीय आवरण का उल्लेख कर उसे समर्पित करे।

(३) तृतीय आवरण—नव पूर्वादि चतुर्दलों में वामावर्त से—

वैरोचन वज्र० स्वाहा वैरोचनाय नमः श्रीपादु०
शङ्ख-पाण्डुर " शङ्ख-पाण्डुराय "
पद्म-नाभ " पद्म-नाभाय "
असिताभ " असिताभाय "

आग्नेयादि कोणों के दलों में—

नामक वज्र० स्वाहा नामकाय नमः श्रीपादु०
मामक " मामकाय "
पाण्डुर " पाण्डराय "
तारक " तारकाय "

इनका ध्यान इस प्रकार करे—

सर्वे भिन्नाञ्जन-प्रख्याः खड्ग-कुन्त-वराभयाः ।
चतुर्भुजाः मदोन्मत्ताः घूर्णिताः लोहितेक्षणाः ।।
स्व-कुलालिङ्गनानन्दाश्चूर्णिताः शेष - तामसाः ।

पूर्व-वत् तृतीय आवरण का उल्लेख कर उसे समर्पित करे।

(४) चतुर्थ आवरण—नव पूर्वादि चारों द्वारों में—

पद्मान्तक	वज्र० स्वाहा	पद्मान्तकाय	नमः श्रीपादु० ।
विघ्नान्तक	,,	विघ्नान्तकाय	,,
यमान्तक	,,	यमान्तकाय	,,
नरकान्तक	,,,	नरकान्तकाय	,,

इनका ध्यान यह है—

सर्वे बन्धूक-पुष्पाभाः खड्ग-शक्ति-लसत्-कराः ।
नाग - सूत्र - बद्ध - जटाः मदाघूर्णित-लोचनाः ।।

पूर्व-वत् चतुर्थ आवरण का समर्पण करे ।

(५) पञ्चम आवरण—भूपुर में पूर्वादि-क्रम से दशों दिक्-पालों का पूजन करे । यथा—

लं इन्द्राय वज्र-सहिताय	श्रीपादुकां	पूज०	तर्प०	स्वाहा
रं अग्नये शक्ति-सहिताय	,,	,,	,,	,,
यं यमाय दण्ड-सहिताय	,,	,,	,,	,,
क्षं निर्ऋतये खड्ग-सहिताय	,,	,,	,,	,,
वं वरुणाय पाश-सहिताय	,,	,,	,,	,,
य वायवे अंकुश-सहिताय	,,	,,	,,	,,
कुं कुबेराय गदा-सहिताय	,,	,,	,,	,,
हं ईशानाय त्रिशूल-सहिताय	,,	,,	,,	,,
आं ब्रह्मणे पद्म-सहिताय	,,	,,	,,	,,
ह्रीं अनन्ताय चक्र-सहिताय	,,	,,	,,	,,

पूर्व-वत् पञ्चम आवरण का समर्पण करे ।

देवी-पूजन—आवरण - पूजन करने के बाद विन्दु में श्री उग्र-तारा का पूजन करे । पहले 'देवी-भूषणेभ्यो नमः' से पाद्यादियों से पूजन कर उनके प्रत्येक आभूषण का पूजन करे—

मुण्ड-माले वज्र-पुष्पं प्रतीच्छ हूं फट् स्वाहा एते गन्ध-पुष्पे मुण्ड-मालायै नमः ।

व्याघ्र-चर्माम्बर	वज्र०	...स्वाहा	व्याघ्र-चर्माम्बराय	नमः
क्षुद्र-घण्टिकाः	"	"	क्षुद्र-घण्टिकाभ्यो	"
नाग-कृत-हार	"	"	नाग-कृत-हाराय	"
नाग-कृत-कङ्कणाः	"	"	नाग-कृत-कङ्कणेभ्यो	"
नाग-कृतांगुलीयकाः	"	"	नाग-कृतांगुलीयकेभ्यो	"
नाग-कृत-कटि-सूत्र	"	"	नाग-कृत-कटि-सूत्राय	"
कपाल-पञ्चक-पट्टिका-त्रय	"		कपाल-पञ्चक-पट्टिका-त्रयाय	"
देवी-सर्व-भूषणाः	"	"	देवी-सर्व-भूषणेभ्यो	"

चारों दिशाओं में—

उन्मत्त-शिवा-गणाः	"	"	उन्मत्त-शिवा-गणेभ्यो	"

इसके बाद शव-रूप शिव का ध्यान करे । यथा—

महा-कालं महा-कायं शुद्ध - स्फटिक - रूपिणम् ।
नानालङ्कार - भूषाढ्यं चन्द्र - चूडं त्रिलोचनम् ।।
ऊर्ध्व -वक्त्रं मुक्त - केशं द्वि-भुजं च प्रसुप्तकम् ।
दंष्ट्रा कराल-वदनं लोल-जिह्वं सिताननम् ।।
हृदि दक्ष-पदं देव्या उरो वाम-पदं धृतं ।
शव-रूप-महादेवं सर्व - सिद्धि - प्रदायकम् ।।

ध्यान कर चुकने पर पूर्व-वत् पूजा-मन्त्रों का उच्चारण कर पाद्यादि से पूजन-तर्पण करे। फिर देवी को पुष्पाञ्जलि देकर पुनः ध्यान करे और यथा-शक्ति उपचारों से सायुधा स-वाहना स-परिवारा देवी का पूजन कर बलि प्रदान करे । यथा—

१९—बलि-दान

सात्विक-बलि—अपनी वाईं ओर त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्रात्मक मण्डल बनाकर गन्ध-पुष्प से उसका पूजन करे। फिर उस पर विहित आधार-सहित बलि-पात्र में माष मांस, तण्डुल, दधि, हरिद्रा, दग्ध मोन, ग्रासन, पिरायक, लवण, अर्द्रक आदि स्थापित कर वाएँ हाथ की अनामा और अंगुष्ठ से पात्र को छूते हुए निम्न मन्त्र तीन वार पढ़े—

ॐ ह्लीं उग्र-तारे, देवि ! महा-यक्षाधिपतये मयोपनीतं बलिं गृह्ण गृह्ण, गृह्णापय, गृह्णापय, मम शान्ति कुरु कुरु, पर-विद्यामाकृष्याकृष्य, त्रुट् त्रुट् छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि, सर्व-जनं मे वशमानय ह्लीं ॐ स्वाहा।

अथवा निम्न मन्त्र को तीन बार पढ़ें—

ॐ ह्लीं उग्र-तारे ! महा-यक्षाधिपतये ममोपनीतं बलिं गृह्ण गृह्ण, गृह्णापय गृह्णापय, मम सर्व-शान्ति कुरु कुरु, पर-विद्यामाकृष्याकृष्य, त्रुट् त्रुट्, छिन्दि छिन्दि, सर्वं जगद् वशमानय ह्लीं स्वाहा।

उक्त किसी एक मन्त्र को पढ़ने के वाद **'एष बलिः श्रीमदुग्रतारायै नमः'** मन्त्र से बलि प्रदान करें।

राजसिक बलि—सुलक्षण छागादि पशु को देवी के आगे खड़ा करे। 'फट्' से अर्घ्योदक द्वारा उसका प्रोक्षण, मूल-मन्त्र से वीक्षण, 'हुँ' से अवगुण्ठन, 'वं' से धेनु-मुद्रा-द्वारा अमृती-करण और योनि-मुद्रा से सन्दीपन कर उसे सिन्दूर, चन्दन, पुष्प-माला आदि से सजावे। तव उसके दाहने कान में तीन वार गायत्री सुनावे। यथा—

ॐ पशु-पाशाय विद्महे विश्व-कर्मणे धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात्।

इसके बाद 'ॐ छाग-पशवे नमः' से गन्ध-पुष्पादि द्वारा उसका पूजन करे। तब खड्ग लाकर पूर्व-वत् उसके भी संस्कार करे। 'हुं खड्गाय नमः' से उसका पूजन करे। उसके अग्र-भाग में 'ॐ वागीश्वरी-ब्रह्माभ्यां नमः' से, मध्य में 'ॐ लक्ष्मी-नारायणाभ्यां नमः' से और मूल में 'ॐ उमा-महेश्वराभ्यां नमः' से पूजन करे। अन्त में 'ॐ ब्रह्म-विष्णु-शिव-शक्ति-युक्ताय खड्गाय नमः' से उसका पूजन कर निम्न मन्त्र से उसे प्रणाम करे—

ॐ खड्गाय खर-नाशाय शक्ति-कार्यार्थ-तत्परः पशुः छेद्यस्त्वया शीघ्रं खड्ग-नाथाय नमोऽस्तु ते।

तब ताम्रादि-पात्र में तिल, कुश, जल लाकर सङ्कल्प पढ़े। यथा—

ॐ अद्येत्यादि श्रीमदुग्र-तारा-प्रीतये (अन्य कामार्थे वा) इमं छाग-पशुं वह्नि-दैवतमेष पशुं वायु-दैवतं महिष-पशुं यम-दैवतं भगवत्यै श्रीमदुग्र-तारायै तुभ्यमहं सम्प्रददे (घातयिष्ये वा)।

सङ्कल्प छोड़कर खड्ग उठाये और 'ॐ छिन्धि छिन्धि हुँ फट् स्वाहा' मन्त्र से उससे पशु के स्कन्ध का स्पर्श करे। तब अपने को देवी-स्वरूप भावित कर पशु को पूर्व-मुख खड़ा करे और छेत्ता स्वयं उत्तर-मुख होकर 'हूँ फट्' मन्त्र का उच्चारण करते हुए ऐसा तीव्र प्रहार करे कि एक ही बार में पशु-छेदन हो जाय।

तब कवोष्ण रुधिर, लोम-संयुत कुछ मांस और मधुर पदार्थ लेकर देवी के आगे बलि निवेदित करें। भूमिस्थ रुधिर के चार भाग कर पूर्वादि-क्रम से वटुक, योगिनी, क्षेत्रपाल और गणेश को बलि प्रदान करे। अन्त में घी के दीपक के सहित शीर्ष की बलि देवी को निवेदित करे।

२०—जप-विधान

एक सौ आठ या एक सौ बार वर्ण-माला से या रहस्य-माला से या कर-माला से मूल-मन्त्र का जप करे। जप का क्रम यह है कि पहले हाथ जोड़कर बाँईं ओर गुरु-चतुष्टय को, दाईं ओर गणेश को और मध्य में श्रीमदुग्र-तारा को प्रणाम करे। तब प्राणायाम, ऋष्यादि, कराङ्ग-न्यासों को कर मन्त्र-शिखा की भावना करे। मूलाधारस्थ कुण्डलिनी को षट्-चक्र-भेद के क्रम से सहस्रार में ले जाकर पुनः मूलाधार में ले आये, यह क्रिया सात बार करने से जो तेज उत्पन्न होता है, वही 'मन्त्र-शिखा' है। इसी प्रकार निम्नलिखित भावनाएँ करे–

मन्त्र-चैतन्य–'हूं' वीज-पुटित मूल-मन्त्र की भावना सहस्रार, हृदय, मूलाधार और पुनः सहस्रार, हृदय में करने से मन्त्र-चैतन्य होता है।

मन्त्रार्थ—देवता के शीर्ष से लेकर पाद-पर्यन्त मन्त्र-वर्णों की क्रमशः भावना करना मन्त्रार्थ है।

योनि-मुद्रा–शिर में श्रीगुरु का ध्यान कर हृदय में इष्ट-देवी का ध्यान करे। फिर शीर्ष से मूलाधार तक और मूलाधार से शिर तक योनि-रूपा देवी की भावना कर योगिनी-वीज 'ऐं' का दश वार जप करे। यह योनि-मुद्रा है।

कुल्लुका–'ह्रीं स्त्रीं हूं' का मूर्ध्नि पर दस वार जप करे।

सेतु–'ॐ' का हृदय में दस वार जप करे।

महा-सेतु–'हूं' का कण्ठ में दस वार जप करे।

निर्वाण—ॐ अं मूलं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं

ॐ मूलं ॐ क्षं ळं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं ॡं ऌं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं ॐ—

इस निर्वाण-मन्त्र का नाभि में दस या एक बार जप करे।

जिह्वा-शोधन—'श्रीं ॐ श्रीं हूं ॐ ठं' मन्त्र से जल-द्वारा जिह्वा का शोधन कर मूलाधार, मूर्ध्नि और ललाट में काम-बीज 'क्लीं' का दस बार जप करे।

मुख-शोधन—'ह्लीं ह्लीं ह्लीं' का मुख में दस बार जप करे।

मन्त्र-ध्यान—मूल-चक्र में कोटि सूर्य-वत् प्रभावान् हृल्लेखा 'ह्रीं' का, स्वाधिष्ठान में पीत-वर्ण वधू-बीज 'स्त्रीं' का, नाभि में जीमूत सङ्काश कूर्च-बीज 'हूं' का, हृदय में महत्-प्रभावाले अस्त्र-बीज 'फट्' का और मूलाधार से ब्रह्म-रन्ध्र तक कोटि-सूर्य जैसी प्रकाशमान, योगियों की दृष्टि को पवित्र करनेवाली सर्वा-विद्या 'ह्रीं स्त्रीं हूं फट्' का ध्यान करे।

चौर-मन्त्र—प्रत्येक द्वार में चौर-मन्त्र का दस बार जप करे। यथा—ब्रह्मरन्ध्र में 'क्रों', दोनों कानों में 'ह्रीं ह्रीं', दोनों आँखों में 'ह्रीं ह्रीं', दोनों नासिकाओं में 'हूं हूं', मुख में 'श्रीं श्रीं', नाभि में 'हसौः हसौः', लिङ्ग में 'क्लीं क्लीं', गुह्य में 'ब्लुं ब्लुं' और भ्रू-मध्य में 'हूं फट्'।

प्राण-योग—'ह्रीं मूलं ह्रीं' का सात बार जप करे।

दीपनी—'ॐ मूलं ॐ' का " "

निद्रा-भङ्ग—'ईं मूलं ईं' का " "

तदनन्तर विहित माला को लाकर निम्न मन्त्र से अर्घ्योदक या शुद्ध जल-द्वारा उसे स्नान करावे—

ह्रीं माले, माले, महा-माले, सर्व-शक्ति-स्वरूपिणि ! चतुर्वर्ग-स्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।

फिर 'ह्लीं अक्ष-मालिकायै नमः' से गन्धादि पञ्चोपचारों द्वारा माला को पूजा कर निम्न मन्त्र से उसे प्रणाम करे—

ह्लीं अविघ्नं कुरु माले ! त्वं जप-काले सदा मम ।
निर्विघ्नं कुरु देवेशि, अक्ष-माले ! नमोऽस्तु ते ।।

अब मन्त्र-रूप देवता और देवता-स्वरूप गुरु की भावना कर 'ॐ मूलं ॐ' इस अशौच-भङ्ग मन्त्र का सात बार जप करे। तब गुरु, मन्त्र और देवता के तेज-रूप के ऐक्य की भावना कर १०८ बार, सहस्र या अयुत बार जप करे। जप कर चुकने पर माला को शिखा के ऊपर स्थापित कर उसकी स्तुति करे। यथा—

ह्लीं त्वं माले ! सर्व-देवानां प्रीतिदा शुभदा भव ।
शिवं कुरुष्व मे भद्रे ! यशो वीर्यं च देहि मे ।।

फिर प्राणायाम कर—

ॐ गुह्यातिगुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्-कृतं जपं ।
सिद्धिं कुर्वन्तु मे देवि ! त्वत्-प्रसादान्महेश्वरि ।।

यह मन्त्र पढ़ते हुए पुष्पार्घ्योदक लेकर तेजोरूप जप-फल को देवी के बाँयें हाथ में समर्पित कर दे।

इसके बाद 'ॐ मूलं ॐ' इस अशौच - भङ्ग का सात बार जप कर पूर्व-वत् ऋष्यादि न्यास, कुल्लुका और सेतु का जप कर 'ॐ' कहकर निम्न मन्त्र से प्रणाम करे—

त्वं काली काल-रात्रिस्त्रिभुवन-जननी भैरवी मङ्गला त्वं
स्तौमि त्वां देवि! नित्यं त्रिभुवनवरदा सिद्धिभूता त्वमेव
एका शक्तिस्त्रिभेदा परम पर-वशा सा महा-हंस-रूपा ।
काम-स्तम्भ-स्वरूपा क्षिति-जलमनलं वायुराकाश-तत्वं ।

सर्वस्यैवोदरस्था त्रिभुवन-जननी ब्रह्म-विष्ण्वीश-रूपा,
कुंडल्याकार-संस्था कुलमकुल-गता पातु मामुग्र-तारा।।

फिर 'सर्व-मङ्गल-माङ्गल्ये०' इत्यादि पढ़कर साष्टांग या पञ्चांग प्रणाम कर 'ॐ अखण्ड-मण्डलाकार०' इत्यादि से श्रीगुरु को भी प्रणाम करे। तव स्तव-कवचादि का पाठ कर प्रदक्षिणा करे। पुनः प्रणाम कर नित्य-होम करे। यथा—

२१—नित्य-होम

कुण्ड, स्थण्डिल या सम-तल भूमि में पूर्व की ओर तीन रखायें वनावे। मूल-मन्त्र से उनका वीक्षण, 'फट्' से कुशों द्वारा ताड़न, 'फट्' से ही अर्घ्योदक-द्वारा प्रोक्षण और 'हूँ' से अभ्युक्षण करे। फिर 'मूलं श्रीमदुग्र-तारायाः स्थण्डिलाय नमः' से स्थण्डिल का पूजन कर विहित अग्नि लावे और पूर्व-वत् उसके वीक्षणादि संस्कार करे। 'मूलं हूँ फट् क्रव्यादेभ्यः स्वाहा' मन्त्र से प्रज्वलित एक अङ्गार नैऋत्य में क्रव्यादों के लिए छोड़कर अग्नि का 'हुं' से अवगुण्ठन और 'वं' से धेनु-मुद्रा-द्वारा अमृतीकरण करे। तव दोनों हाथों से अग्नि को उठाकर स्थण्डिल के ऊपर तीन वार घुमावे और शिव-वीज-बुद्धि से उसे स्थण्डिल में अपनी ओर को स्थापित करे। फिर 'ह्रीं वह्नि-मूर्तये नमः, रं वह्नि-चैतन्याय नमः' इस मन्त्र से पूजन कर चेतनता की कल्पना करे। 'ॐ चित्पिङ्गल हन हन दह दह पच पच मथ मथ सर्वं ज्ञापय स्वाहा' से अग्नि को प्रज्वलित कर उसे निम्न मन्त्र से प्रणाम करे—

ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जात-वेदं हुताशनं।
सुवर्ण - वर्णममलं समिद्धं विश्वतो मुखम्।।

अब 'ॐ अग्ने ! त्वं श्रीमदुग्रतारा - नामासि' से अग्नि को इष्ट-देवता का नाम देकर 'ॐ श्रीमदुग्रतारा-नामाग्नये नमः' से उसका पूजन करे। फिर घृत के वीक्षणादि संस्कार कर प्रादेश-प्रमाण दो कुश-पत्रों से घृत के तीन भागों की कल्पना करे। बाँएँ भाग में इडा, दाएँ में पिङ्गला और मध्य भाग में सुषुम्णा का ध्यान करे। 'नमः' से दायें भाग का आज्य लेकर 'ॐ अग्नये स्वाहा' से अग्नि के दायें नेत्र में और बाँयें भाग का आज्य लेकर 'ॐ सोमाय स्वाहा' से अग्नि के बाँयें नेत्र में हवन करे। मध्य भाग के आज्य से 'ॐ अग्नि-सोमाभ्यां स्वाहा' से अग्नि के मुख में हवन करे। तदनन्तर 'ॐ भूः स्वाहा, ॐ भुवः स्वाहा, ॐ स्वः स्वाहा, ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा' इन महा-व्याहृतियों से होम कर निम्न मन्त्र से तीन बार हवन करे—

ॐ वैश्वानर, जातवेद ! इहावह लोहिताक्ष ! सर्व-कर्माणि साधय स्वाहा।

अब षडङ्ग-हवन करे। यथा—ह्लां उग्रतारे हृदयाय नमः स्वाहा, ह्लीं तारिण्यै शिरसे स्वाहा, ह्लूं वज्रोदके शिखायै वषट् स्वाहा, ह्लैं उग्रजटे कवचाय हुं स्वाहा, ह्लौं महा-प्रतिसरे नेत्र-त्रयाय वौषट् स्वाहा, ह्लः पिङ्गोग्रैक-जटे अस्त्राय फट् स्वाहा।

तदनन्तर भैरव-मन्त्रों से हवन करे—ॐ असिताङ्ग-भैरवाय स्वाहा, ॐ रुरु-भैरवाय स्वाहा, ॐ चण्ड-भैरवाय स्वाहा, ॐ क्रोध-भैर० स्वाहा, ॐ उन्मत्त-भैर० स्वाहा, ॐ कपाल-भैर० स्वाहा, ॐ भीषण-भैरवाय स्वाहा, ॐ संहार-भैरवाय स्वाहा।

फिर स्वाहान्त मूल-मन्त्र से सोलह आहुतियाँ देकर 'इतः पूर्वं प्राण-बुद्धि०' इत्यादि स्वाहान्त मूल-मन्त्र से पूर्णाहुति प्रदान करे। तब संहार-मुद्रा से अग्नि में से देवी को अपने हृदय में

लाकर 'अग्ने ! क्षमस्व' से अग्नि का विसर्जन करे और दही या जल से पृथ्वी को शीतल कर दे। अन्त में स्रुव में लगी हुई भस्म से 'यं यं कामयते' इत्यादि का पाठ करते हुये अपने तिलक लगावे।

होम करने के बाद स्तव, कवचादि का पाठ कर प्रदक्षिणा और नमस्कार करे। तदनन्तर उपस्थित वीर-मण्डली यथा-विधि देवता का नीराजन कर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

२२—विसर्जन

अब विसर्जन करे। इसके लिए पहले विशेषार्घ्य के जल से आत्म-समर्पण करे। यथा—इतः पूर्वं प्राण-बुद्धि-देह-धर्माधि-कारतो जाग्रत्स्वप्न-सुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु मा मदीयं च सकलं पर-देवता-श्रीमदुग्रतारा-चरणे समर्प-यामि स्वाहा ॐ तत्सत्।

फिर हाथ जोड़कर 'ॐ जानताऽजानता वापि यन्मया क्रियते शिवे ! तव कृत्यमिदं सर्वमिति ज्ञात्वा क्षमस्व मे' यह पढ़े और संहार-मुद्रा से यन्त्र के एक फूल को उठाकर श्वास-मार्ग से देवी को अपने हृदय में ले आवे।

ऐशान कोण में त्रिकोण-चतुरस्रात्मक मण्डल लिखकर उस पर फूल चढ़ावे और देवी के निर्माल्य-नैवेद्य आदि से वहाँ उच्छिष्ट-चाण्डालिनी का पूजन करे। उनका ध्यान यह है—

शवोपरि समासीनां रक्ताम्बर - परिच्छदां,
रक्तालंकार - संयुक्तां गुंजा - हार - विभूषिताम्।
षोडशाब्दां च युवतीं पीनोन्नत-पयोधराम्,
कपाल-कर्तृकां हस्तां पर - ज्योतिः - स्वरूपिणीम्॥

मन्त्र है—'उच्छिष्ट-चाण्डालिनि, सुमुखि, देवि, महा-पिशाचिनि ! ह्रीं ठः ठः ।' इस मन्त्र से पूजन कर 'उच्छिष्ट-चाण्डालिन्यै नमः' से बलि प्रदान करे।

अब मूल-मन्त्र का उच्चारण कर 'श्रीमदुग्रतारे ! पूजिताऽसि, क्षमस्व' से देवी का विसर्जन कर निर्माल्य सिर पर धारण करे। देवी का चरणोदक ग्रहण कर प्रसाद शक्ति और साधकों को दे कर शेष स्वयं स्वीकार कर ले। निर्माल्यादि नदी या विल्व-मूल या जहाँ कहीं पवित्र स्थान में स्थापित करे। पूजा-स्थान को परिष्कृत कर गुरु और देवी का स्मरण करे तथा वैष्णवाचार में तत्पर होकर यथा-सुख विहार करे।

२३—प्रसाद-ग्रहण

दिव्याचारवाले विसर्जन से पूर्व और वीराचारवाले विसर्जन के वाद पान-भोजनादि कर। चक्रेश्वर अपनी दाईं ओर स-शक्ति श्रीगुरु को बठावे और पाद्यादि से उनकी पूजा करे। तब गुरु-पात्र गुरु को, शक्ति-पात्र गुरु-पत्नी को प्रदान करे। गुरु न हों, तो उनके समान साधक को या जल में गुरु-पात्र समर्पित कर दे। इसी प्रकार अन्य ज्येष्ठ शक्ति-वीरों को अपनी दायीं ओर और कनिष्ठ शक्ति-वीरों को बाँईं ओर बैठावे। भोग-पात्र को अपने सम्मुख रख कर शक्ति या योगिनो-पात्र अपनी शक्ति को प्रदान करे। तदनन्तर ज्येष्ठ-क्रम से शक्ति-वीरों को गन्धादि-द्वारा पूजा करे और उन्हें शुद्धि इत्यादि सहित पात्र प्रदान करे।

अन्य साधक भी दोनों हाथों से पात्र ग्रहण कर उसे आधार के ऊपर स्थापित करें। फिर उस पर मूल-मन्त्र का दस बार जप कर वे तर्पण, तत्व-शुद्धि व विन्दु-स्वीकार करें। तब शुद्धि-सहित पात्र निवेदित कर मूल-मन्त्र का १०८ बार जप करें। जप-फल समर्पित कर प्रणाम करें और कुछ द्रव्य दक्षिणा-रूप में आचार्य

को निवेदित करें। तदनन्तर चक्र-नायक सामयिकों के साथ पात्र-वन्दना करे। यथा—

प्रथम पात्र-वन्दना

ॐ श्रीनाथादि-गुरु-त्रयं गण-पतिं पीठ-त्रयं भैरवं।
सिद्धौघं बटुक-त्रयं पद-युगं दूती-क्रमं शाम्भवं॥
वीरेशाष्ट-चतुष्क-षष्टि-नवकं वीरावलि - पंचकं।
श्रीमन्मालिनि मन्त्र-राज-सहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम्॥

यह वन्दना पढ़ कर पात्र को बाँएँ हाथ में त्रिखण्डा या कपाल-मुद्रा से ग्रहण कर दाएँ हाथ में शुद्धि इत्यादि लेकर दोनों हाथ जोड़े हुये निम्न वन्दनाएँ पढ़े—

श्रीमद्-भैरव-शेखरे प्रविलसच्चन्द्रामृतं प्लावितं।
क्षेत्राधीश्वर-योगिनी-जन-गणैः सिद्धैः समाराधितुम्॥
आनन्दार्णवकं महात्मकमिदं साक्षात् त्रिखण्डामृतं।
वन्दे श्रीप्रथमं कराम्बुज - गतं पात्रं विशुद्धि-प्रदं॥१॥

ॐ समुद्रे मथ्यमाने तु क्षीराब्धौ सागरोत्तमे।
तत्रोत्पन्नां सुरां देवीं कन्यका - रूप - धारिणीम्॥
गोमूत्र-सदृशाकारां फेणामृत - समुद्भवां।
अष्टादश-भुजैर्युक्तां नीरजायत-लोचनाम्॥२॥

आनन्द-शेखरे जातः आनन्दश्च महेश्वरः।
तयोर्योगे भवेद् ब्रह्मा विष्णुश्च शिव एव च॥३॥

इदं पवित्रममृतं पिबामि भव-भेषजं।
पशु-पाश-समुच्छेद कारणं भैरवोदितम्॥४॥

चित्तेः स्वातंत्र्य-भावत्वात् तस्यानन्द-मयात्मनः ।
तन्मयत्वाच्च भावानां भावश्चान्तर्हिता रसे ॥
सुषुम्नाया विकाशाय सुरसस्तेन पीयते ।
तस्मादिमां सुधां देवीं पूर्णोऽहं त्वां पिबाम्यहं ॥५॥
हिरण्य - पात्र-सम्भूतमिदन्तां परमामृतं ।
परा - हन्ता - मये वह्नौ जुहोमि शिव-रूप-धृक् ॥६॥
ॐ ब्रह्मार्पणं ब्रह्म-हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतं ।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्म - कर्म - समाधिना ॥७॥
तस्मादिमां सुधां देवीं पूर्णोऽहं त्वां जुहोम्यहं ।

यह मन्त्र पढ़कर गुरु, शक्ति और साधकों से 'जुहोमि' कह कर आज्ञा की प्रार्थना करे। वे उत्तर में आदर-पूर्वक 'जुषस्व' कहें। तव मूलाधार से कुण्डलिनी को जीभ तक आई हुई ध्यान कर श्रीगुरु का स्मरण करते हुये अपने को शिव-रूप ध्यान कर मूल-मन्त्र का उच्चारण करते हुए कुण्डलिनी-मुख में हवन करे और शुद्धि ग्रहण करे। इसी प्रकार अन्य साधक भी करें। तब सब कोई अपने-अपने आधार पर सभी पात्र स्थापित कर दें। चक्र-नायक हाथों को शुद्ध कर तीन या पाँच तोले के प्रमाण से द्वितीय पात्र का परिवेशन करे और साधक - गण श्रीगुरु का ध्यान कर द्वितीय पात्र-वन्दना करें। यथा—

हैमं मीन-कलान्वितं सुमहिमां योगं महा - मांसकं ।
किंचिन्नेत्र-विचञ्चलं रवि-वरं छाया-पदं शाश्वतम् ॥
आनन्दादि-महार्णवे विगलितं ज्ञानं महा-मोक्षदं ।
वन्दे पात्रमहं द्वितीयमधुना स्वात्मावबोध-क्षमम् ॥

इस प्रकार वन्दना कर पूर्व-वत् पात्र-स्वीकार कर मीन ग्रहण करें। तब तृतीय पात्र का परिवेशन कर हृदय में इष्ट-देवता का ध्यान करें और तृतीय पात्र-वन्दना पढ़ें। यथा–

महा-पद्मे करे पद्मे योनिमालोकयन् धिया।
दग्ध-मीन - समोपेतं वन्दे पात्रं तृतीयकम्॥

पात्र स्वीकार कर मुद्रा ग्रहण करें। फिर चतुर्थ पात्र का परिवेशन कर प्राणायामादि करें। तब चतुर्थ पात्र-वन्दना पढ़ें। यथा–

मुद्रा-रूपां योनि-मुद्रां सिद्धिदां सिद्धि-रूपिणीम्।
भजामि परया भक्त्या चतुर्थं पावयाम्यहम्॥

पात्र स्वीकार कर मांस, मीन और मुद्रा ग्रहण करें। उसके बाद पञ्चम पात्र का परिवेशन कर १०८ या १० बार मूल-मन्त्र का जप करें। जप-फल समर्पित कर प्रणाम करें। तब पञ्चम पात्र-वन्दना करें। यथा–

यन्त्र-ध्वजं च संयोगं पंचमं परिकीर्तितम्।
तदुद्भूतेनामृतेन कल्पयामीह पञ्चमम्॥

शक्ति-उच्छिष्ट-युक्त पात्र स्वीकार कर नाना व्यंजन-संयुक्त अन्न ग्रहण करें। तब षष्ठ पात्र का परिवेशन कर अधिकारी साधक कुल-संध्या करें।

इसके बाद षष्ठ पात्र-वन्दना करें। यथा–

सदानन्द-प्रदं द्रव्यं महानन्द-प्रदायकम्।
गुरु-पाद-गतैर्ज्ञानैः षष्ठ-पात्रं नमाम्यहम्॥

इस प्रकार वन्दन कर परमान्न आदि ग्रहण करें। अब सप्तम पात्र-वन्दना करें। यथा–

समुद्र-सप्त-सम्भूतं समुद्र-वारिजं शुभम् ।
समुद्रे निगमे प्राप्ते गृह्णामि सप्तमीं सुधां ।।

पात्र स्वीकार कर दधि, दुग्धादि ग्रहण करें। अष्टम पात्र-वन्दना इस प्रकार है—

अष्ट-दुर्गा शक्ति-रूपा महिषासुर - नाशिनी ।
तां स्मृत्वा चाष्टमं पात्रं गृह्णामि श्रीनगात्मजे ।।

पात्र स्वीकार कर मिष्ठान्नादि ग्रहण करें। फिर नवम पात्र-वन्दना करें। यथा—

नव-दुर्गा समाख्याता शुम्भादि-प्राण-नाशिनी ।
पुनाति सा जगद्धात्री नवमे शङ्कर - प्रिया ।।

पात्र ग्रहण कर फल, मूलादि ले और तब दशम पात्र-वन्दना इस प्रकार करें—

महा-विद्या दश प्रोक्ता महती-सिद्धि-दायिनी ।
महा-मोह - विनाशाय मोहिनी दशमे करे ।।

एकादश पात्र-वन्दना यह है—

एकादशा महा-रुद्रा वसु-सिद्धि - प्रदायकाः ।
चतुष्षष्टि-सिद्धिदास्तान् वन्दे चैकादशे करे ।।

पात्र ग्रहण कर यथेच्छ शुद्धि आदि का चर्वण करें। तदनन्तर पात्र-वन्दनाएँ इस प्रकार हैं—

द्वादशे द्वादशादित्याः सदा तर्पण - तत्पराः ।
वाम - नेत्र - स्वरूपेण द्वादशं वन्दयास्म्यहम् ।। १२

त्रयोदशे महा-विद्या शारदा परि - भूतये ।
वाचां सिद्धि-प्रदा देवीं वन्दे पात्रं त्रयोदशं ।। १३

तदनन्तर पात्र में जल छोड़कर उसे भूमि पर पलट दें। भूमि पर गिरे जल में माया-वोज 'ह्रीं' लिखकर उसमें की मिट्टी से निम्न मन्त्र से तिलक करें–

ॐ यं यं स्पृशामि पादेन यं यं पश्यामि चक्षुषा।
स एव दासतां यातु यदि शक्र-समो भवेत्॥

पहले शक्ति के ललाट पर तिलक देकर तब अपने लगाये। दूसरों के तिलक लगाने में–'ॐ यं यं स्पृशसि पादेन यं यं पश्यसि चक्षुषा' इत्यादि मन्त्र पढ़ें। अव शान्ति-स्तोत्र पढ़ें। यथा–

ॐ पाहि त्वं करुणा-मयि! प्रियतमं त्वत्-साधकं रक्षतु।
भ्रष्टान् नाशय नाशय प्रिय-तमां वक्त्रारविन्दे मम॥

नित्यं देहि सुधां सुधा-मधु-मयीं सिद्धि शिवे! सिद्धिदां।
ज्ञानं मोक्ष-विधायकं कुरु शिवे! संहारिणी पातु मे॥

यह पढ़कर यथेष्ट विहार करे।

विशेष—'पात्र-वन्दना' के पद्य विविध प्रकार के मिलते हैं। इस सम्बन्ध में 'चक्र-पूजा के स्तोत्र' नामक पुस्तक द्रष्टव्य है।

परिशिष्ट

१ षोढा-न्यास

निम्न-लिखित सभी न्यासों में 'ॐ ह्रीं त्रीं हूं' को आदि में रखकर और नाम को चतुर्थ्यन्त करके 'नमः' को अन्त में लगा कर न्यास करे।

१ श्रीकण्ठादि-न्यास—स-विन्दु मातृका-वर्ण से नाम को युक्त कर मातृका-न्यास के स्थानों में न्यास करे—श्रीकण्ठ, अनन्त, सूक्ष्मेश, त्रिमूर्त, अमरेश, अर्थीश, भारभूतीश, अतिथोश, स्थाण्वीश, हरेश, भिण्टीश, भौतिकेश, सद्योजातेश, अनुग्रहेश, अक्रूरेश, महा-सेनेश, क्रोधीश, चण्डेश, पंचान्तकेश, शिवोत्तमेश, एक-रुद्रेश, कूर्मेश, एकाननेश, चतुराननेश, अजेश, सर्वेश, सोमेश, लांगलीश, दारुकेश, अर्घ-नारोश्वरेश, उमा-कान्तेश, आषाढीश, दण्डीश, अत्रीश, मीनेश, मेषेश, लोहितेश, शिखोश, छागलण्डेश, द्विरण्डेश, महाकालेश, वालेश, भुजंगेश, पिनाकीश, खड्गीश, केशव, श्वेतेश, भृग्वीश, लकुलोश, शिवेश, संवर्तकेश।

२ ग्रह-न्यास—अं आं⋯अं अः रक्त-वर्ण-सूर्य हृदि, यं⋯वं शुक्ल-वर्ण-सोम भ्रू-द्वये, कं⋯ङं रक्त-वर्ण-मङ्गल लोचन-त्रये, चं⋯ञं श्याम-वर्ण-बुध वक्ष-स्थले, टं⋯णं पीत-वर्ण-वृहस्पति

कण्ठ-कूपे, तं⋯नं श्वेत-वर्ण-भार्गव घण्टिकायां, पं⋯मं नील-वर्ण-शनैश्चर नाभि-देशे, शं⋯हं धूम्र-वर्ण-राहु मुखे, लं क्षं धूम्र-वर्ण-केतु नाभौ।

३ दिक्-पाल-न्यास—ललाट में न्यास करे—अं इं उं ऋं लृं एं ओं अं इन्द्र पूर्वे, आं ईं ऊं ॠं ॡं ऐं औं अः अग्नि आग्नेये, कं⋯ङं यम दक्षिणे, चं⋯ञं निॠति नैॠत्याम्, टं⋯णं वरुण पश्चिमे, तं⋯नं वायु वायव्ये, पं⋯मं सोम उत्तरे, यं⋯वं ईशान ईशाने, शं⋯हं ब्रह्मन् ऊर्ध्वे, लं क्षं अनन्त अधः।

४ षट्-चक्र-न्यास—वं⋯सं डाकिनी-युत-ब्रह्मन् मूलाधारे, वं⋯लं राकिनी-युत-विष्णु स्वाधिष्ठाने, डं⋯फं लाकिनी-युत-रुद्र मणिपूरे, कं⋯ठं काकिनी-युतमीश्वर अनाहते, अं⋯अः साकिना-युत सदाशिव विशुद्धौ, हं क्षं हाकिनी-युत-पर-शिव आज्ञा-चक्रे।

५ तारादि-न्यास—अं आं कं⋯ङं तारा ब्रह्म-रन्ध्रे, इं ईं चं⋯ञं उग्रा ललाटे, उं ऊं टं⋯णं महोग्रा भ्रूमध्ये, ऋं ॠं तं⋯नं वज्रा कण्ठे, लृं ॡं पं⋯मं महा-काली हृदि, एं ऐं यं⋯वं सरस्वती नाभौ, ओं औं शं⋯हं कामेश्वरी लिंगे, अं अः लं क्षं चामुण्डा मूलाधारे।

६ पीठ-न्यास—अं इं⋯ओं अं काम-रूप-पीठ आधारे, आं ईं⋯औं अः जालंधर-पीठ हृदि, कं⋯ङं पूर्ण-गिरि-पीठ ललाटे, चं⋯ञं उड्यान-पीठ केश-संधौ, टं⋯णं वाराणसी-पीठ भ्रुवोः, तं⋯नं अवन्ति-पीठ नेत्रयोः, पं⋯मं माया-पुरी-पीठ मुखे, यं⋯वं मथुरा-पीठ कण्ठे, शं⋯हं अयोध्या-पीठ नाभौ, लं क्षं कांचीपुरी-पीठ कट्याम्।

२ विशेष सूचना

भगवती श्री तारा के उपासकों के लाभार्थ 'श्रीतारा-स्तव-मञ्जरी' अलग से प्रकाशित है, जिससे आवश्यक कवच, हृदय, शतनाम आदि स्तोत्रों का यथा-स्थान वे पाठ कर सकते हैं।

'श्रीतारा-स्वरूप तत्व' में भगवती तारा के विविध ध्यानों का भावार्थ समझाया गया है, जिससे ध्यान करने में उन्हें सहायता मिल सकती है।

'मन्त्र-कोष' में भगवती तारा के विविध भेदों का वर्णन करते हुये प्रत्येक स्वरूप के विविध मन्त्रों के उद्धार देते हुये उनके अनुसार मन्त्रों के स्पष्ट रूप दिखाए गए हैं। साथ ही ऋषि, छन्द, देवता, वीज, शक्ति, कीलक, ध्यान और पुरश्चरण-संख्या आदि का विवरण भी प्रस्तुत किया गया है।

इन सब पुस्तकों से श्रीतारा के मन्त्र की साधना की प्रायः सभी मुख्य वातें जानी जा सकती हैं किन्तु क्रियात्मक रूप से साधना करने में जानकार गुरुदेव का मार्ग-निर्देशन लेना परमावश्यक है। उनकी कृपा से न केवल पुस्तकों की त्रुटियों का ज्ञान होता है अपितु विविध कर्मों के करने का सही ढंग भी सीखने का अवसर मिलता है। अतः विधि-वत् गुरुदेव से दीक्षा लेकर ही भगवती तारा की मन्त्र-साधना में प्रवृत्त होना चाहिये तभी वांछित सफलता साधना में मिल पायेगी।
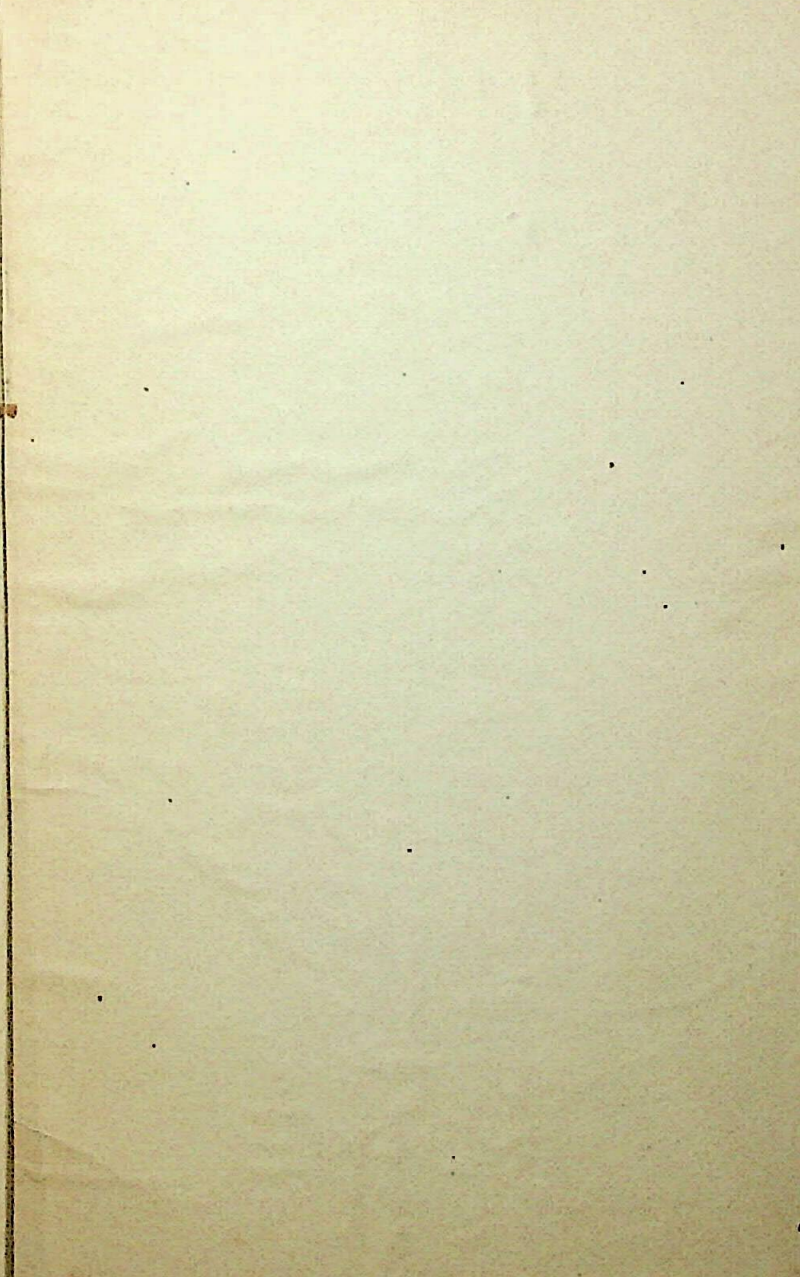
शाक्त-धर्म

सम्बन्धी

प्रामाणिक पुस्तकों के लिये

सम्पर्क करें

चण्डी कार्यालय

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

अलोपीबाग मार्ग, प्रयाग—६